भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 21 | उदयपुर शुक्रवार 15 नवंबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

चितौड़ की कालिकादेवी और अभिलेख

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

कभी दुर्ग से दुर्गादेवी के माहात्म्य कहे गए और फिर किले की कालिका का जयकारा लगा। उज्जैन की गढ़ कालिका से किला कुंडार और कलकत्ते तक कालिका की महिमा बढ़ी। चित्रकूट (चित्तौड़गढ़) किले में भी कालिका विराजमान हुई। इसका श्रेय गोस्वामी नागींद्र गिरि को है। महाराणा अरसी और महाराणा भीमसिंह के काल में चित्तौड़गढ़ में व्याप्त अशान्ति और अस्थिरता की शांति कालिका माता की प्रतिष्ठा के साथ हुई। काली नाम और प्रतिमा सफेद! वीरमदेवोत राणावत चन्दनसिंह अग्रणी रहे। यह समय विक्रम संवत् 1844 यानी 1783 का था। वैशाखी अष्टमी। यही तिथि 'चित्तौड़ी आठम' कहलाई। यह घटना चित्तौड़ के पुनरुत्थान और समृद्धि की दिशा में एक प्रस्थान बिन्दु है लेकिन इसका यथेष्ट उल्लेख नहीं हुआ। कालिका माता मन्दिर में इसके बाद के बीस सालों के तीन शिलालेख लगे हैं जिनको मैं अच्छे दस्तावेज मानता हूं।

उस समय ध्वस्त पड़े, ग्यारह सौ बरस पुराने कलात्मक शिल्प वाले सूर्य मन्दिर में काली-गोरी मूर्तियां विराजमान हुईं और अनेक आयोजन आरम्भ हुए। मेवाड़ और मारवाड़ के नागोरी पंचोलियों ने प्रयास किए जिसमें मुख्य सेवक पंचोली मालदास गोवर्धननाथोत, मगनराय, रतनराय, रामराय आदि के नाम यहां संवत् 1864 की असोजी पूर्णिमा के लेख में उत्कीर्ण हैं। यह लेख अभी पढ़ा जा सकता है।

इसी काल की एक बही में यह पाठ मिलता है -

श्री रामजी।
श्री एकलिंगजी, श्रीनाथजी
सही

।। स्वस्ति श्री श्री हजूर रा हुकम वीरमदेवजी राणावत चदणजी हे अप्रच माताजी श्री कालकाजी रो देवल स्थर करायो यो परणाव्यो जदी रावत धीरत सिंघ जी हे कहे ने रुपया 200) दोये से रो षेडो तथा गाम चढ़ावजो बाल भोग सामगरी सारू, म्हारो हुकूम हे, संवत 1864 वर्षे पौष सुदी 7 सुकरे।

आज का कालिका माता मन्दिर मूल रूप से सूर्य मन्दिर रहा है जो 9वीं सदी के प्रतिहार काल की सुन्दर रचना है और भगवान भास्कर के उस संक्रमण पथ का प्रमाण है जो मेवाड़ी जनपद के वृत्त में 180 अंश अर्धवृत्त पर माना जा सकता है। इसकी योजना ने कालांतर में चित्रकूट शैली का नाम पाया। यह मन्दिर एक ऊंचे अधिष्ठान पर स्थित है। सामने सूर्य कुण्ड बना हुआ है। सूर्य मन्दिरों की एक विशेषता सम्मुख सुन्दर पुष्करिणी होना है। आक्रमणकारियों ने इस मन्दिर की मूल प्रतिमा को खण्डित कर दिया था। लम्बे समय तक यह मन्दिर वीराने में रहा। इसके खण्डहर और अवशेष भी बहुत मिल जाते हैं। इसका समकालीन अन्नपूर्णा मन्दिर है लेकिन उसकी नाम से पहचान मिट गई, वह कभी लक्ष्मी मन्दिर था।

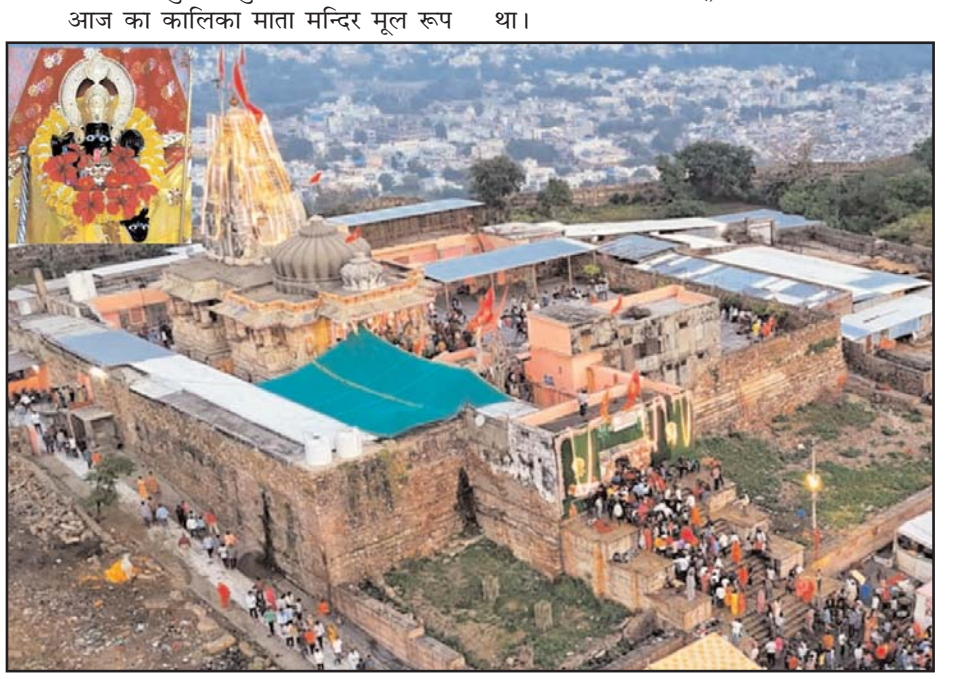

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शक्ति उपासक साधुओं ने अवसर पाकर उक्त मन्दिर में देवी काली की प्रतिमा स्थापित की, तब से यह कालिका माता मन्दिर के नाम से जाना जाता है। इस मन्दिर को एक विशाल परकोटे से सुरक्षित किया गया है। मन्दिर के मूल स्वरूप में अब तक काफी परिवर्तन हो चुका है। मन्दिर बाहर से भले ही साधारण सा है किन्तु मन्दिर के गर्भगृह एवं मण्डप में दुर्लभ मूर्तिशिल्प सज्जित है।

गर्भगृह के मुख्य द्वार पर सप्ताश्व रथ सवार सूर्य की अत्यंत कलात्मक प्रतिमा बनी हुई है। बाईं ओर सपत्नीक विष्णु और दाईं ओर शिव पार्वती की प्रतिमा लगी हुई है। इसके अतिरिक्त मन्दिर में अश्विनी कुमार, इंद्र, अग्नि, सूर्य, यम, वरुण आदि की मूर्तियां भी हैं। मन्दिर के नीचे के परिक्रमा पथ की ताकों में आसनस्थ चतुर्बाहु लकुलीश, शिव पार्वती, पृथ्वीवल्लभ वराह और समुद्र मंथन के बहुत सुन्दर फलक लगे हुए हैं।

यह मन्दिर शिल्प में बहुत कमाल का साक्षी है। यह उस दौर का साक्षी भी है जबकि शासकों ने माना कि राजवंश के लिए मार्तंड जैसी प्रभा और प्रभाव हो तो प्रजा का प्रिय रंजन राजा हुआ जा सकता है। उन्होंने सूर्य की आराधना की। जिस-जिस देवता का गुण चाहिए, उसको पाने के लिए उसके प्रिय हों और फिर प्रतिष्ठा करें। सूर्य की प्रतिष्ठा रथ सप्तमी की मानी जाती है जैसा कि प्रतिष्ठा ग्रन्थों का मत है।

प्रतिहार सूर्य के विरूद को धारण करने वाले हुए... आदित्य, भानु, अर्क, रवि आदि। लाल पाषाण से यह मन्दिर बना क्योंकि प्रत्युष वेला का अरुण रंग होता है। अब भी वह पत्थर इसमें दिखाई देता है। इसके संरक्षण और दुर्ग पर अनेक आस्थाओं के विकास के काल में इसमें समुद्र मंथन, वराह (वैष्णव मत), लकुलीश (पशुपत मत प्रभाव), शिव और पार्वती (शैव मत में शाक्त संयोग) आदि दिखाई देते हैं। परिक्रमा पथ में लगाई ये प्रतिमाएं उन सबकी परिचायक हैं। इनकी कहानियां भी कही जाती थीं- शिव ने अपने दण्ड पर इस मन्दिर को उठा रखा है (लकुलीश)... पक्ष विपक्ष के झगड़े को मिटाने के लिए यह मन्दिर बनाया (समुद्र मंथन) आदि। वस्तुतः यह सूर्य मन्दिर स्थापत्य और शिल्प के सुंदर समन्वय का लावण्यमय रूपक है। संधार प्रसाद, नवग्रह, दिकपाल, गंगा यमुना और कोष्ठकों में सूर्य की रथारूढ मूर्तियां बहुत कुशल कलाकारों की देन है। परिक्रमा पथ में सूत्रधारों के नाम पूर्वनागरी लिपि में मिल जाते हैं।

अन्त्येष्टि का तर्क संगत तरीका

- डॉ. रणजीत -

जब हम इस सवाल का सामना करते हैं कि अन्त्येष्टि का सबसे संगत और मानवीय तरीका क्या है, तब हमारी सामने सबसे पहले इसके विभिन्न प्रचलित तरीके आते हैं। विभिन्न मानव समूहों या धर्मावलम्बियों में प्रचलित इन तरीकों में तीन स्पष्ट हैं।

पहला हिन्दू तथा हिन्दोस्तान में जन्में धर्मो- बौद्ध, जैन सिक्ख आदि में प्रचलित शव दहन। दूसरा ईसाई, इस्लाम और यहूदी जैसे अब्राहमिक धर्मों में प्रचलित मिट्टी में दफन करने का तरीका और तीसरा भारत के ईरानी मूल के अग्निपूजक पारसी लोगों में प्रचलित मानवीय गरिमा बोध को चोट पहुंचाने वाला वह तरीका जिसमें अपने मृतक के शव को गिद्ध आदि पक्षियों के नोच खाने के लिए घर की छत पर छोड़ दिया जाता है। एक बहुत ही छोटे अल्पसंख्यक वर्ग का यह तरीका तो आज के किसी भी विचारशील व्यक्ति को स्वीकार्य नहीं लगेगा। जैसे कपाल क्रिया की दृष्टि से भी अस्वीकार्य है।

इससे मिलता-जुलता एक और तरीका है अपने शव को नदी, तालाब, समुद्र आदि किसी जलाशय में छोड़ देना। समुद्र और बड़ी नदियों जहां उन्हें शार्क, घड़ियाल आदि जलचर शीघ्र ही चट कर जाते हैं, में तो कोई हर्ज नहीं है, पर छोटे जलाशयों में उन्हें छोड़ना, उन्हें प्रदूषत करके अन्ततः मानव-समाज को ही हानि पहुंचाता है, इसलिए उचित नहीं है।

अब हम मानव समाज में प्रचलित दो सर्वाधिक स्वीकार्य तरीकों- दहन और दफन के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर आ सकते हैं। दहन, यदि विद्युत शवदाह गृह में किया जाय और उसके साथ जुड़े धार्मिक कर्मकाण्ड छोड़ दिये जायें तो उसमें कोई बुराई नहीं है।

इसीलिए यह योरोप आदि के विकसित देशों के धर्म निरपेक्ष मानववादी तर्कशील लोगों में अधिक प्रचलित हो रहा है पर उसका प्रचलित परम्परागत हिन्दू रूप, चिता में शव दहन न केवल वन-रक्षा और उससे फैलने वाले वायु प्रदूषण की दृष्टि से गलत है, उसके साथ जुड़े हुए भयानक कर्मकाण्ड जैसे कपाल क्रिया की दृष्टि से भी अस्वीकार्य है।

इसी तरह जमीन में गड्ढ़ा खोदकर मनुष्य के शव को उसमें दफना देना, माटी के इस पुतले को माटी में ही मिला देना, एक सहज स्वाभाविक कार्य है। वहीं घुलमिल जाय तो प्रदूषण की भी कोई समस्या नहीं है। समस्या तब पैदा होती है, जब उस पर कोई समाधि या मक़बरा खड़ा किया जाय।

यदि प्रत्येक मृतक के लिए मक़बरा खड़ा किया जाय तो यह धरती छोटी पड़ जाएगी। विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों, महान लेखकों, विचारकों, वैज्ञानिकों, कलावन्तों और अन्य संस्कृतिकर्मियों की कब्रों पर स्मारक बनाए जाने चाहियें। ये नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत होंगे तो सामान्य मृतकों के लिए क्या किया जाना चाहिए?

उन्हें बाबा आम्टे के आनन्दवन (कुष्ठाश्रम) की तरह सड़कों के किनारे दफना कर उन पर एक-एक पेड़ लगा दिया जाना चाहिये। शव उन पेड़ों के लिए खाद बनकर सार्थक हो उठेगा और वे पेड़ ही उन जनों के स्मारक भी हो जायेंगे। खेतों के मालिक अपने खेत में अपने परिजनों को दफनाएं, सामान्यजन सड़कों के किनारे और संसार में हरियाली बढ़ाएं तो यह तरीका विद्युत दहन से भी अधिक पर्यावरण रक्षक और मानव हितेषी ठहरेगा। मानव जाति के लिए अधिक तर्क संगत और वरणीय।

मृत्यु के बाद भी मानव शरीर को सार्थक करने का एक तरीका जो पिछली कुछ दशाब्दियों में विवेकशील लोगों के बीच लोकप्रिय हुआ है, उसकी चर्चा किये बिना अन्त्येष्टि पर यह टिप्पणी अधूरी ही रहेगी। वह है, किसी दुर्घटना में ब्रेनडेड व्यक्ति के अन्य रोगियों के काम आने लायक अंगों का उसके परिजनों द्वारा दान और किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी चिकित्सा संस्थान को मृत्यु से पूर्व वसीयत लिखकर अपनी पूरी देह समर्पित कर देना।

सन् 1948 में भारत के सभी राज्यों में 'एनाटामी एक्ट' पास किये गये जिनके अनुसार कोई भी दानदाता चिकित्सा और तत्सम्बन्धी शोध के लिए स्थापित चिकित्सा संस्थानों को अपना शरीर वसीयत करके दान दे सकता था। इन कानूनों में यह भी प्रावधान है कि ऐसी लावारिश लाशों को जिस पर 48 घण्टे तक कोई परिवार दावा न करे, शोधकार्य के लिए कब्जे में ले लिया जा सकता है।

प्रारम्भ में कुछ राजनेताओं ने जिनमें साम्यवादी मुख्यमंत्री ज्योतिबसु और जनसंघ के नानाजी देशमुख प्रमुख हैं, इस तरह का देहदान किया और तर्कशील लोगों में यह सिलसिला चल पड़ा। पंजाब और हरियाणा में तो अब तर्कशील सोसायटी के ज्यादातर सदस्य गाजे-बाजे के साथ अपने बुजुर्ग परिजनों के दानिश शवों की बारात निकाल कर इन चिकित्सा संस्थानों तक पहुंचते हैं।

मानव शव के 'अन्तिम संस्कार' या अन्तिम सार्थकता का इससे अच्छा, इससे तर्कसंगत और इससे मानव हितेषी तरीका और कौन हो सकता है?

नोट : ये लेखक के अपने विचार हैं। इनसे शब्द रंजन का सहमत होना जरूरी नहीं है।

- संपादक

मेवाड़ की रियासतकालीन दीपावली की परम्पराएँ

डॉ. कुलशेखर व्यास

भारतीय हिन्दी पंचाग के अनुसार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि से कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि तक मनाया जाने वाला पाँच दिवसीय त्योहार दीपावली के नाम से जाना जाता है। इस त्योहार को दीपावली, दीपोत्सव, दिवाली, कौमुदी, दीपमालिका, सुख-सुप्ति, काली पूजा इत्यादि नामों से पुकारते हैं। इसे अंधकार पर प्रकाश की विजय के प्रतीक, अंधकार के नाश का पर्व भी कहा जाता है।

यह त्योहार मेवाड़ राज्य के रियासतकाल में बड़े हर्ष और उल्लास से मनाया जाता था। त्योहार के आगमन से ही मेवाड़ राज्य के कुम्हार (प्रजापत) वर्ग मिट्टी से दीपक बनाने का कार्य प्रारम्भ कर देते थे। वे दीपक के साथ-साथ मिट्टी की एक पुतली भी बनाते थे, जिसके दो हाथ होते थे, जो दोनों हाथ ऊपर किये हुए होती थी तथा दोनों हाथ तथा सिंर पर दीपक का आकार बनाया जाता था। इसके साथ ही मिट्टी की घट्टी बनाने भी बनाते थे जो वास्तविक घट्टी जैसी प्रतीत होती थी।

यह दो भागों में विभक्त होती थी। घट्टी के ऊपर के भाग में एक हत्था होता था, जिससे इसे घुमाया जाता था। इसके अतिरिक्त एक अश्व (घोड़ा) के आकार का पशु बनाया जाता था, जिसकी पीठ पर दीपक रखने का स्थान बनाया जाता था। ये सभी वस्तुएँ मेवाड़ के नागरिक कुम्हार से क्रय करके अपने घर लाते थे। दीपक का प्रयोग तो धन त्रयोदशी (धनतेरस) से ही प्रारम्भ कर देते थे, परन्तु पुतली, घट्टी और अश्व का प्रयोग दीपावली के दिन भगवान के कक्ष में किया जाता था। पुतली के दोनों हाथों तथा सिर पर बने दीपक में जलता हुआ दीपक रखा जाता था। उसी प्रकार अश्व की पीठ पर बने दीपक में भी जलता हुआ दीपक रखा जाता था।

मेवाड़ राजपरिवार के कुलगुरु परिवार के सदस्य, संगीतकार एवं प्रसिद्ध इतिहासविद् स्व. डॉ. राजशेखर व्यास के अनुसार ऐसी मान्यता है कि यह पुतली लक्ष्मी का स्वरूप है, जो अपने दोनों हाथों में दीपक लिए हाथ ऊपर उठाकर यह कामना कर रही है कि यह घर हमेशा रोशन रहे और ऊचाँइयों की ओर अग्रसर होता रहे।

रीति रिवाज और सामाजिक परम्पराओं की सिद्धहस्त समाजरत्न स्व. श्रीमती शकुन्तला व्यास के अनुसार मिट्टी की घट्टी को भी उसी दिन घर की गृहणियाँ अपने हाथों से घुमाती थी। ऐसी मान्यता है कि अपने हाथों से घट्टी चलाकर धान को पिसने की भावना से यह घर हमेशा धान से भरा रहे। इसी के साथ अश्व जैसा जो पशु होता था; वह पशु प्रेम की ओर ईशारा करता प्रतीत होता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जे. के. ओझा के अनुसार प्राचीन भवनों के द्वार के दोनों ओर घोड़े की आकृति की खूटियाँ लगाई जाती थी और उस पर दीपक रखने की परम्परा थी और अश्व एक पालतू पशु है, जिसका उपयोग सवारी करने, माल ढोने के अतिरक्त अन्य कार्यों में लिया जाता था। इस कारण इसको इस पूजा में स्थान दिया गया था।

रियासतकालीन मेवाड़ में कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को धन त्रयोदशी (धनतेरस) का त्योहार मनाया जाता। इस दिन महिलाएँ सूर्योदय से पूर्व उठकर मुख्यद्वार की उदम्बर (देहली) को साफकर गेरू से लिपती थी। सूर्योदय से पूर्व एक मिट्टी के दीपक में तेल से भर जलाकर कुमकुम और अक्षत से पूजा करती थी। उसके पश्चात् घर की सभी महिलाएँ स्नान करके साफ और सुन्दर वस्त्र पहन कर भट्टियानी चौहट्टा स्थित विष्णुप्रिया भगवती महालक्ष्मीजी के दर्शन के लिए जाती थी।

दर्शन से लौटने के बाद दिनचर्या के कार्य सम्पन्न कर सायंकालीन दीपक जगाने का कार्य प्रारम्भ करती थी। इसमें सर्वप्रथम मिट्टी के दीपक को पानी में भिगोकर सुखाती थी। फिर उनमें रुई से बनी बत्ती रखती थी तत्पश्चात् उसमें तेल पूरती थी और उसके बाद एक-एक कर सभी दीपक को प्रज्वलित करती थी। दीपक में बोर और गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े रखती और कुमकुम अक्षत से पूजा करती थी। पूजा के पश्चात् सर्वप्रथम एक दीपक भगवान के कक्ष में फिर अन्य कमरों में, एक दीपक घर के मुख्य द्वार पर तथा घर के चारों कोनों में एक-एक दीपक रखती थी।

मिट्टी की लक्ष्मी स्वरूप पुतली, घट्टी एवं अश्व, छायाचित्र रश्मि व्यास

डॉ. राजशेखर व्यास एवं शकुन्तला व्यास के अनुसार मकान के दक्षिण-पूर्वी कोने में गेहूँ के आटे से निर्मित चतुष्कोण दीपक के चारों कोनों में चार बत्तीवाला दीपक जलाती थी, जिसे यम दीपक कहाँ जाता था। ऐसी कामना की जाती थी कि घर परिवार में किसी भी सदस्य की अकाल मृत्यु न हो। ऐसा लगभग हर परिवार में किया जाता था, परन्तु यह परम्परा वर्तमान में लगभग लुप्त प्राय: हो गई है।

घर का मुखिया बाजार से अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोने, चाँदी या किसी धातु का बर्तन अवश्य क्रय करता था। दीपक रखने के पश्चात्

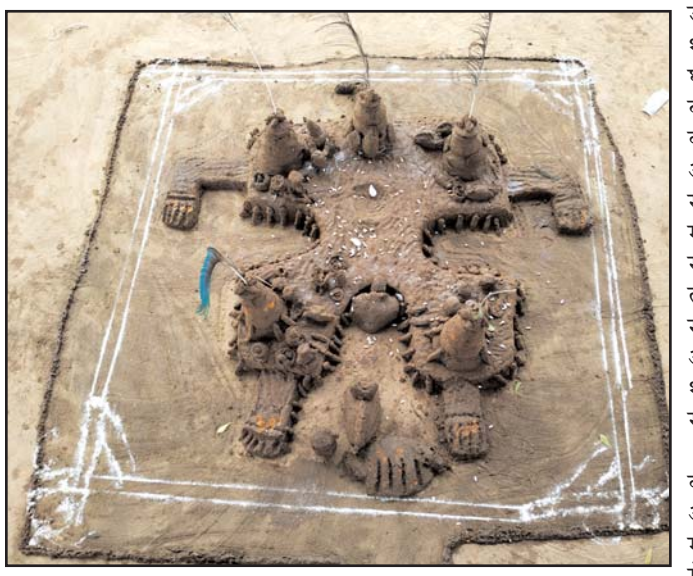

महिलाएँ अपने घर का सम्पूर्ण जेवर, कलदार चाँदी के सिक्के और नकद राशि के साथ मुखिया द्वारा क्रय की गई वस्तु को भी पूजा स्थल पर रखती जिसकी पूजा की जाती थी।

इस पूजा में घर के सभी सदस्य सम्मिलित होते थे तथा पूजा का कार्य घर के मुखिया द्वारा सम्पन्न किया जाता था। उसके बाद परिवार के सदस्य महालक्ष्मीजी के मन्दिर दर्शन करने जाते थे। मेवाड़ के महाराणा भी धनत्रयोदशी के दिन महालक्ष्मीजी के दर्शनार्थ आते।

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रूपचतुर्दशी, रूपचौदस तथा नरकचतुर्दशी भी कहा जाता है, का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन परिवार के सभी लोग सूर्योदय से पूर्व उठकर शौच आदि से निवृत्त होकर अपने शरीर पर तेल की मालिश करते थे तथा अपामार्ग के पौधे को पानी में डाल देते थे और उस पानी से स्नान करते थे।

कहीं-कहीं अपामार्ग की सात आठ इंच की सात या आठ टहनियों को अपने सिर पर रख जल से स्नान किया जाता था। साथ ही यमराज को तर्पण एवं जलांजलि देते थे। स्नान से निवृत्त होकर महालक्ष्मीजी के मन्दिर दर्शन करने जाते थे। दर्शन करने के पश्चात् दिनचर्या के कार्य से निवृत्त होकर पुन: सायंकालीन दीपक की तैयारी प्रारम्भ कर दी जाती थी। दीपक के कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् पूर्व दिवस की भाँति घर के सभी सदस्य पुन: एक स्थान पर एकत्रित होकर साक्षात् लक्ष्मी (रोकड़ कलदार एवं सोने चाँदी से निर्मित आभूषण जेवर) की पूजा परिवार के मुखिया द्वारा की जाती थी। पूजा के पश्चात् महालक्ष्मीजी के दर्शनार्थ जाते थे।

इसी के अन्तर्गत पुरुष वर्ग में जुआँ खेलने की प्रथा थी, जिसमें महाराणा के साथ सरदार उमराव जुआँ खेलते थे, वहीं आमजन भी महाराणा का अनुसरण करते हुए जुआँ खेला करते थे परन्तु यह प्रथा महाराणा शम्भुसिंह के काल के पश्चात् समाप्त हो गई। धीरे-धीरे यह प्रथा आमजन में भी समाप्त हो गई है, परन्तु कहीं-कहीं वर्तमान में भी इस प्रथा का निर्वहन किया जाता है।

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को दीपावली, दीपमालिका, दिवाली का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन राजप्रसाद के साथ-साथ आमजन में भी पूर्ण उमंग और उत्साह होता था और हर व्यक्ति अपने घर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने का यत्न करता था। कच्चे मकानों को गोबर और मिट्टी से लिपकर सुन्दर बनाया जाता और मकानों के प्रवेश द्वार पर सुन्दर मांडणें बनाए जाते तथा पक्के मकानों पर रंग रोगन कर उसे सुन्दर और आकर्षक बनाया जाता था। प्रवेश द्वार पर सुन्दर रंगोली बनाई जाती।

ऐसी मान्यता है कि कार्तिक मास की अमावस्या को महालक्ष्मीजी पृथ्वीलोक में निवासरत मानवों के घरों में विचरण करके यह अवलोकन करती है कि मेरे निवास करने योग्य कौनसा घर है। दीपक के कार्य के पश्चात् सभी सदस्य सुन्दर नये वस्त्र धारण कर लक्ष्मीजी के दर्शनार्थ जाते। दर्शन के उपरान्त सगे-सम्बन्धियों से मिलते हुए पुन: अपने निवास पर आते और लक्ष्मीजी की पूजा-अर्चना करते। पूजा के दौरान कुम्हार से क्रय की गई मिट्टी की पुतली के ऊपर किये हुए दोनों हाथों में और सिर पर निर्मित दीपक और अश्व की पीठ पर बने दीपक में घी का दीपक करती थी। महिलाएँ मिट्टी की प्रतीकात्मक घट्टी को घुमाती और यह कामना करती कि हमारा घर धान से हमेशा भरा रहे। इसके पश्चात् माता लक्ष्मीजी की आरती की जाती थी।

इस त्यौहार पर उमंग और उत्साह में चूर बालक अपने-अपने दल के साथ हाथ में मिट्टी की बनी हीड़ लेकर घर-घर हीड़ हींचने जाते और एक स्वर में गाते -

हरणी हरणी थूं क्यूं दूबली रे
चाल म्हारा देस मारा.....
हीड़ हीचा पैसा मेलो तेल पूरो.....

दल गीत गाकर पैसे लेते है और इस त्योहार का आनन्द स्वयं लेते हैं और दूसरों को भी आनन्द से सराबोर करते हैं। आमजन दल को पैसे देते और दीपक में तेल डालकर दीपोत्सव पर्व की बधाई और शुभकामनाएँ देते।

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को खेखरा, गोवर्धन, अन्नकूट पूजा कहा जाता है। इस दिन महिलाएँ घर के मुख्य द्वार के बाहर गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत का निर्माण करती और पूजा के पश्चात् गाय से उस गोबर को कुचलवाती। स्व. डॉ. राजशेखर व्यास एवं स्व. श्रीमती शकुन्तला व्यास के अनुसार भगवान कृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्का अंगुली पर धारण किया था और सभी बृजवासियों को उनकी शरण में ले लिया था। उसी दिन से इस परम्परा का प्रारम्भ हुआ था।

गोवर्धन पूजा के दिन विविध प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं और भगवान को भोग लगाया जाता है, जिसे अन्नकूट कहाँ जाता है। यह आयोजन लगभग सभी विष्णु मन्दिरों में किया जाता है।

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भाईदूज, भैयादूज या यमद्वितीया का त्यौहार मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन यमराज ने अपनी बहन जमुना नदी के घर भोजन किया था। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए बहन भाई को अपने घर पर भोजन के लिए आमन्त्रित कर बड़े प्यार और मनोयोग से भोजन करवाती है और यमराज से लम्बी आयु की कामना करती है।

मेवाड़ में रियासतकाल में दीपावली का त्योहार बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता था और इसमें हर उम्र के व्यक्ति की अपनी अलग भूमिका होती थी। साथ ही महाराणा की ओर से भी आमजन के लिए विशेष सहयोग मिलता रहता था, परन्तु वर्तमान में आमजन में इस त्योहार को मनाने का उत्साह तो बहुत है, परन्तु अपनत्व की भावना का अभाव परिलक्षित होता है। वहीं इस त्योहार पर तेल के दीपक जलाने का जो महत्व है उससे वर्तमान पीढ़ी दूर होती जा रही है और दीपक की जगह विद्युत से रोशनी की जाने लगी है। घर के द्वार पर मांड़णें और रंगोली की जगह स्टीकर ने ले ली है।

कविराज श्यामलदास द्वारा रचित ''वीरविनोद'', डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित रचित ''मेवाड़ दरीखाने के रीति रिवाज'' पुस्तक एवं स्व. डॉ. राजशेखर व्यास के बताए अनुसार दीपावली पर्व के दिनों में राजप्रासाद में महाराणा की ओर से दावत का आयोजन होता था, जिसमें राव, सरदार, उमराव, जागीरदार एवं विशिष्ट पदों पर आसीन व्यक्ति और अतिविशिष्टजन भाग लेते थे।

दावत के पश्चात् नगीनाबाड़ी में दरबार लगता था जहां दरीखानें में उपस्थित सभी व्यक्तियों को कालीगुदगरी के साठें, मेरिये (गन्ने) वितरित किये जाते थे। इसके पश्चात् महाराणा अपने भाई एवं उनके बेटों के साथ जनाना महल में हीड़-सिचवाने जाते थे। राजप्रासाद की ''हटसाल'' पर दीपक जलाकर रोशनी की जाती थी और महाराणा की ओर से कुछ परिवारों को परम्परानुसार घर पर दीपक करने हेतु मिट्टी के दीपक, रूई, तेल इत्यादि सामग्री दी जाती थी।

गोवर्धन पूजा के दिन राजप्रासाद के तोरण पोल के बाहर गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाया जाता और गायों से कुचलवाया जाता था। नाथद्वारा और कांकरोली में अनाज और मिठाई का ढेर लगा कर भोग लगाया जाता था, जिसे भीलों द्वारा लूटा जाता। यह प्रथा श्रीनाथजी मन्दिर में वर्तमान में भी प्रचलन में है।

इसी दिन चौगान (वर्तमान में उदयपुर का गाँधी ग्राउण्ड) में बास और लकड़ियों की सहायता से एक जलंधर दैत्य की बड़ी आकृति बनाई जाती थी, जिसमें बारुद और रंग भरकर कागज से ढक दिया जाता था। वहीं हाथियों की लड़ाई और घोड़ों की दौड़ भी होती थी।

मेवाड़ महाराणा सायंकाल चौगान पहुँचते तो सर्वप्रथम हाथियों की लड़ाई देखते। फिर दो-दो घोड़ों की जोड़ियाँ दौड़ा कर देखते थे। उसके बाद जलंधर दैत्य को आग लगाई जाती थी। इसके पश्चात् महाराणा पुन: महलों की ओर प्रस्थान कर जाते थे। यह तमाशा देखने के लिए काफी संख्या में आमजन एकत्रित होते थे।

स्मृतियों के शिखर (193) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गर्भाधान से लासण जूण तक

पूरी सृष्टि विचित्रताओं से भरी हुई है। हम जो जानते हैं उससे कई गुना अधिक अनजाना है, रहस्यमय है जिसे जानने की हमारी तमन्ना, उत्कंठा, जिज्ञासा बनी रहती है। बालजन्म भी अपने में कई रहस्यों का पिटारा लिए है। कहते हैं, नारी की सफलता ही उसके मातृत्व में है। जो नारी मां नहीं बन सकती, उसे स्वयं को भी अपना जीवन नकारा लगता है। घर परिवार समाज में भी उसे तिरस्कार ही मिलता है। वह कई रूपों में कइयों द्वारा प्रताड़ित रहती है।

नारी का निखार मातृत्व में :

नि:संतान औरतें संतान प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के टोने-टोटके करती हैं। देवी-देवताओं की शरण पकड़ती हैं और समझेबुझों से, डाक्टरों से इलाज पूछती हैं। कई दृष्टियों से वे ठगी जाती हैं। लोकदेवी-देवताओं में बहुत से देवता निपूती को संतान देते हैं। इसके लिए उसकी गोद भरते हैं। पालने बंधवाये जाते हैं। कल्लाजी राठौड़ ऐसे ही देव हैं जिन्होंने सैकड़ों निपूतियों को सपूत दिये। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा आदि में इनके 900 से अधिक थानक (पूजा स्थल) हैं।

कहते हैं, आबू के अग्निकुंड से चह्वाण वंश उपजा। इस वंश में नरू नामक एक राजा हुआ। उसने 108 विवाह किए पर संतान एक भी नहीं हुई तब बांसवाड़ा जिले के धारणा गांव के आमल्या बावजी (इमली वृक्ष के नीचे बिराजमान देवता) की मनौती बोली गई। वहां एक सौ आठ पालने बंधवाये गये। इससे नरू राजा के 108 बालक हुए। इन्हीं से आगे जाकर आदिवासियों में एक सौ आठ अटकें किंवा साखें अथवा गोत्रें चलीं। वर्तमान में भी ये सभी साखें वाले आदिवासी बांसवाड़ा में मिल जायेंगे।

दूधां न्हावो पूतां फलो :

यह सही है कि हमारे यहां पुत्र-जन्म को ही सर्वाधिक महत्व दिया गया है। स्वयं माताएं भी पुत्र जन्म को श्रेष्ठ मानती हैं और लड़की को पराई समझती हैं। वंश को चलायमान पुत्र ही रखता है। वंशवृक्ष-वंशावली रखनेवाले पोथी वाचक अथवा बही भाट भी अपनी बहियों-पोथियों में इसी को प्राथमिकता देते हैं। यजमान जिनकी पीढ़ियों का वे लेखा-जोखा रखते हैं, उसमें भी पुत्रांकन का ही बोलबाला मिलता है। लोकजीवन में जो कहावतें मिलती हैं वे भी पुत्र-जन्म की ही बलिहारी का बखान लिए हैं। सर्वाधिक चर्चित 'दूधां न्हावो पूतां फलो' कहावत में पूत से तात्पर्य पुत्र से ही है। किसी सौभाग्यवती को आशिष देत समय भी 'पुत्रवती' हो कहा जाता है।

पुत्री का जन्म शुभ नहीं माना जाता इसीलिए उसके जन्म की सूचना अड़ोसी-पड़ोसी को सूप थपथपाकर दी जाती है वहीं पुत्र-जन्म के लिए थाली की गूंजती आवाज सुनाई जाती है। नारियल की चटकें और पतासियां बांटी जाती हैं। रात्रि को बच्चों को कहानियां सुनानेवाली दादी भी कहानी समाप्ति के अंत में यही कहती सुनी जाती है-

खाजो पीजो
म्हारी कैणी मोटी वीजो
हामले घरे छोरो वीजो
पांच पतायां थांई खाजो
पांच पतायां म्हाणे मलजो

अर्थात् बच्चों ! खूब खाओ पीओ यानी फलो फूलो। हमारी कहानी भी बढ़ती रहे, बड़ाई पाती रहे। सामने वाले के पुत्र पैदा हो। उसकी खुशी में पांच पतासी तुम्हें खाने को मिले और हमें भी पांच पतासी प्राप्त हो।

पुत्री-परिवार :

अधिक पुत्रियां पैदा करने वाली महिला न अपने परिवार में और न ही समाज में सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है। मैंने ऐसी महिलाएं देखीं जिनके एक दर्जन तक संतानें हुईं। उनके लिए 'गडूरी' (शूकरी) संबोधन सुना। कहीं-कहीं 'भूंडण' शब्द का प्रयोग मिलता है। ऐसी भी महिलाएं देखने में आईं जिन्होंने पुत्र की आश में छह-आठ तक लड़कियां पैदा करदीं। मेरी बुआजी के तेरह लड़कियां हुई किंतु एक भी जीवित नहीं रही। किसी समझेबुझे ने कहा कि उनकी पीठ पर संपणी (नागिन) की आकृति होने के कारण वह किसी को जीवित नहीं रहने देती है। पुत्र की प्राप्ति अच्छे भाग्य की निशानी है। पुत्री प्राप्ति बोदे अथवा खोटे भाग्य की सूचक है किन्तु अब इस सोच में बड़ा बदलाव आ रहा है।

अधिक पुत्रियां होने पर उनके नाम भी अणछाई (बिना चाह पैदा हुई), धापू (लड़कियां पैदा कर धाप गई, तृप्त हो गई), कचरी (कचरे की तरह व्यर्थ एवं मूल्यहीन, त्याज्य), रोड़ी (कचरे के ढेर अथवा ढगले), बगदी (मूल्यहीन कचरा) मिलते हैं। जिस परिवार में लड़के हों वहां यदि लड़की का जन्म हो जाय तो उसका नाम चावती (चाहने वाली, सबकी प्रिय) रखकर प्रसन्नता व्यक्त की जाती है।

मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। इस जन्म के लिए देवता भी तरसते हैं। देवता अशरीरी होते हैं। मनुष्य के शरीर में आकर वे अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। बातचीत करते हैं। निरोग करते हैं। समस्याओं का समाधान देते हैं। अपने चमत्कारी कार्य से सबकी श्रद्धा एवं आस्था के पात्र बनते हैं। इनका स्थान देवरा होता है। जिसके शरीर में ये भाव अथवा उपस्थिति देते हैं वह भोपा कहलाता है। एक पूरवज होते हैं, गृहदेव जो घर-परिवार तक सीमित रहते हैं। कुल देवता पूरे कुल-गोत्र के रूप में समग्र कुल के रक्षक होते हैं। ये घर-कुल के ही किसी व्यक्ति के शरीर में आते हैं जो उनका 'घोड़ला' कहलाता है।

मृत पूर्वज :

दो माह चार माह का गर्भ गिर जाने पर जो बच्चे मृत जन्म लेते हैं वे भी पूर्वज बनते देखे गये हैं। ऐसी स्थिति में वे अपनी माता के शरीर में आकर अपनी उपस्थिति का अहसास कराते हैं। कोई-कोई पीने को पानी अथवा दूध मांगते हैं। घूंट-दो-घूंट पीने के पश्चात वे चले जाते हैं। यदि कोई उस अवस्था में अपना मुंह खोलता है यानी वाणी देता है, बोलता है तो उसके सम्मुख जो भी प्रश्न या समस्या रखी जाती है उसका भलीप्रकार उत्तर मिलता है और उसकी कही बात सच सिद्ध होती है।

शरीर में नहीं आने वाले कभी-कभी स्वप्न देकर कोई बात कह जाते हैं। ऐसे बाल-मृतक विधिवत पूर्वज के रूप में उस परिवार में स्थापित नहीं होते मगर किसी को मोहवश अपनी स्थापना पूर्वज के रूप में करनी होती है तब वे स्पष्टत: उसका संकेत देकर स्थापित होने वाली तिथि, उसकी प्रक्रिया और स्थान विशेष के बारे में सारी जानकारी देकर परिजनों को निश्चिंत कर देते हैं। परिजन उन्हें स्थापित कर प्रसन्न होते हैं कारण कि पूर्वज सदैव ही उस घर-परिवार के रक्षक तथा सुख और समृद्धि देनेवाले होते हैं।

मेरे अपने ही परिवार में बच्चा होने पर जलमा पूजने का ज्योतिषी से मुर्हूत निकलवाया किंतु उसी रात पूर्वज बावजी ने जच्चा को स्वप्न दिया कि जो मुर्हूत निकाला गया है वह ठीक नहीं है। उस दिन का चन्द्रमा मोरा है, बोदा है अत: कोई दूसरा मुर्हूत निकलवाना। यही किया गया।

श्राद्धपक्ष में पूर्वज की मृत्यु तिथि पर विधिपूर्वक स्मरण कर मिष्ठान्न मुख्यत: खीर-पूड़ी की धूप दी जाती है। यों श्राद्ध की पंचमी को कुंवारों की पांचम के दिन कुंवारे मृतक पूर्वजों को धूप दी जाती है। नवमी को डोकर्‌या नम के दिन बूढ़े मृतकों के नाम धूप दी जाती है। यह तब किया जाता है जब मृतकों की मृत्यु तिथि की जानकारी नहीं रहती है। कोई इन तिथियों पर भी किसी कारणवश अपने पूर्वजों को याद नहीं कर पाता है तब श्राद्ध के आखिरी दिन जो भी अनाम अथवा अजान पूर्वज हुए हों, उनके नाम की धूप दी जाती है। ऐसी स्थिति में पूर्वजों के नाम का जो भी दोष होता है वह टल जाता है।

जो जीव जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। हमारे यहां चौरासी लाख जीव योनी कही गई है। इनमें भटकता हुआ अंत में कोई जीव मनुष्य योनी प्राप्त करता है। इसलिए मनुष्य को अच्छा मनुष्य बने रहने के लिए अच्छा कार्य करते रहना चाहिए।

यह मनुष्य पूर्व जन्म का विश्वासी है। अगले जन्म का विश्वासी है और जन्म-जन्म का विश्वासी है। अकाल मृत्यु पाने वाले को पुन:-पुन: सात बार जन्म धारण करना पड़ता है। मीरांबाई ने द्वारिका में समुद्र समर्पण किया। रैदास को भी दुश्मनों के हाथ अपना मस्तक कटाना पड़ा। गांधीजी की भी हत्या हुई। वीरवर कल्ला राठौड़ भी युद्ध के दौरान मुंड विहीन हुए। युद्ध में, जौहर में, जल प्लावन में मौत पानेवालों की यही गति होती है।

जन्म धारण करने पर या तो बच्चा मुस्कराता है या फिर रोता है। उसके मुस्कराने से तात्पर्य उसका पूर्वजन्म सुखी एवं आनंददायी रहा और उसके रूदन से तात्पर्य उसका जीवन कष्टमय व्यतीत हुआ समझा जाता है। बच्चा जब तक अबोध होता है उसे पूर्वजन्म की सारी स्मृतियां, सारा लेखाजोखा, घर परिवार याद रहता है। पत्र-पत्रिकाओं में यदा कदा ऐसे समाचार भी प्रकाशित होते रहते हैं। ऐसे बच्चे जब अपने पिछले जन्म की सारी दास्तान सुनाकर सच-सच उगलते हैं और पूर्व के निकटस्थ समधियों से मिलते हैं तो सभी अचम्भित हो अवाक् रह जाते हैं।

बच्चे की पहली अभिव्यक्ति रूदन :

सभी जानते हैं कि पैदा होते ही बच्चा रोता है। यह रूदन ही उसकी पहली अभिव्यक्ति है जिसके माध्यम से वह अपनी उपस्थिति का एहसास कराता है। जब तक बच्चा मां के गर्भ में रहता है वह अपने को परम सुखी, परम सुरक्षित एवं परम निश्चिंत पाता है किंतु ज्योंही वह गर्भावस्था से बाहर आता है, अपने को असुरक्षित एवं भयाक्रांत समझ सिहर उठता है। फलस्वरूप रूदन कर यह संकेतित करता है कि वह ऐसी दुनिया में पहुंच गया है जहां अपने को नितांत असहाय महसूस कर रहा है।

अपवाद स्वरूप यदि कोई बच्चा नहीं रो पाता है तब दाई-डाक्टर थपकी-स्पर्श कर उसे रूलाने की चेष्टा करते हैं। बच्चे के रूदन करने पर यह मान लिया जाता है कि सफलतापूर्वक उसका जन्म हो गया है और जच्चा-बच्चा दोनों सुखी हैं। माटी के लौंदे के रूप में बच्चे का यह जन्म सृष्टि का पहला उपहार है। इस समय बच्चा सर्वथा अबोध होता है इसीलिए उसे माटी का पुतला कहा गया है।

गर्भ में रहते हुए बच्चा अपनी माता की नाभि से जुड़ी नली विशेष, नाल से स्वांस लेता है किंतु बाहर आते ही वह दाई अथवा डाक्टर द्वारा जुदा कर दिया जाता है। नाल अलग करते ही बच्चा बाहर की स्वांस लेना प्रारंभ कर देता है। इसके लिए कहा जाता है कि विधाता ने उसे संसार में भेजकर नया जीवन प्रदान किया है।

स्वांसों के जरिए बच्चा जीवित रहता है किंतु उसका पोषण नहीं हो पाता। इसलिए स्वांस के साथ ही उतनी ही महत्वपूर्ण जीवन-निधि के रूप में विधाता बालक की मां को दुग्ध के रूप में सर्वथा पवित्र पेय देती है। यह पेय सृष्टि का सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट अमृत है जिसका कोई सानी नहीं। इसी के साथ पालना रूप में बच्चा मां की गोद पाता है। इस प्रकार मां जहां बच्चे को सर्वप्रकारेण धारण करनेवाली धारित्री है, धरती है वहां उसका पिता बीज-फल है। इस बीजांकुर से ही समग्र सृष्टि फलती-फूलती है।

मां पहली पाठशाला :

मां बच्चे की पहली पाठशाला है। उसी का सान्निध्य पाकर बच्चा चहचहाना सीखता है। यह चहचहाहट चिड़ियों की तरह होती है। यदि कोई बच्चा चहचहाने नहीं लगता है तो उसे घूंट के रूप में चिड़ियों का झूठा पानी दिया जाता है। मैंने ऐसे कुछ बच्चे देखे हैं जिनकी जबान नहीं खुलने से उन्हें चिड़ियों का पानी पिलाया गया और वे चहचहाने लग गए।

सोचो, अगर बच्चे की मां न हो तो क्या बच्चे का ठीक से लालन-पालन हो जायेगा? कदापि नहीं। इसीलिए लोकजीवन में कहावत बनी हुई है, बाप न रहे, बच्चे की मां नहीं मरे। मां के नहीं रहने पर बच्चे का जीवन कण-कण का, छिन्न-भिन्न हो जायेगा। मां तो सौ कष्ट झेलकर भी बच्चे की परवरिश कर लेगी। उसका नानपण (अनाथ समय) निकाल देगी पर पिता उसका ठीक से पालन-पोषण नहीं कर पायेगा और बच्चा दर-दर की ठोकरें खाता रहेगा।

खुशी का पारावार :

मांझल रात में जन्म धारण करनेवाले कीके के हर्षोल्लास का क्या कहना! सुखदेवी जच्चा ने वंशवृद्धि की है। नणदबाई अमर वधावा लेकर आई है। नाई हालर-हूलर सौभाग्यसूचक सुभागपड़ा ले बालजन्म की खबर नाना-नानी को देने पहुंचा है। लोहार-सुथार रूणझुण पालना बनाने की तैयारी में लग गये हैं। देवर अजमा लाने, बाईसा द्वारा उसे छज्जों पर सुखाने, देराणियों-जेठाणियों द्वारा उसे खांडने, सगुणी सास द्वारा उसके लड्डू बनाने तथा गृह-राजवी ससुर द्वारा नेग चुकाने की होड़ाहोड़ी में सब फूले नहीं समा रहे हैं। कीका, कूका बच्चे के प्रिय संबोधन हैं। महाराणा प्रताप को भी बचपन में कूका कहकर संबोधित करते थे।

पक्षी-जगत में भी खुशियों के मारे चहचहाट शुरू हो गई है। इनमें मोर ने सर्वाधिक रंग बिखेरे हैं। वह अपने सारे पंखों को फैलाकर अपनी बोली द्वारा न केवल धरती के प्राणियों को ही अपितु आकाश के दल-बादल को भी कूका के जन्म लेने का पैगाम पहुंचाता बावला बना लग रहा है।

उड़ान भरते मयूर की खबर चारों ओर गूंजित होती है तभी मार्ग में एक नन्ही चिड़िया मिलती है। दोनों के बड़े ही दिलचस्प संवाद होते हैं। इस तरह-

चिड़िया - मोर्‌या रे मोर्‌या कठे चाल्यो ? (मोर ए मोर किधर चला?)
मयूर - बागां में (बागों में)
चिड़िया - कई लेवा ? (क्या लेने?)
मयूर - अजमो (अजवाइन)
चिड़िया - कणी मंगायो ? (किसने मंगवाया?)
मयूर - नानी भाभी (छोटी भाभी ने)
चिड़िया - कई व्यो ? (क्या हुआ?)
मयूर - कूकल्यो (कूका)
चिड़िया - नाम कई? (नाम क्या?)
मयूर - भग्ल्यो (भगल्या)

एक नन्ही चिड़िया का मोर से यह संवाद सार्थक और सकारात्मक है। मोर के पंख ज्ञान-संपदा को वर्धन देने वाले हैं। कृष्ण ने अपने मुकुट में मोर-पंख को वरण किया था। उनके मुकाबले अन्य कोई ज्ञानी, ध्यानी और सम्मानी नहीं हुआ। गीता और महाभारत साक्षी हैं। बचपन में हम लोगों ने कईबार मोर का पंख अपनी किताबों में रखा था। मां सब जानती थी। तब से मोर-पंख का झाड़ू मेरे घर की शोभा बना हुआ है।

यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि मोर कभी भोग नहीं करता। नृत्य करते समय जब वह अश्रु-पात करता है तब ढेलड़ी (मयूरनी) उसे अपने मुंह में झेलती है। उससे वह जो गर्भ धारण करती है, मयूर पैदा होता है और वही आंसू जब धरती पर गिर जाता है तब मयूरनी उसे अपने उदर में डालती है। उससे मयूरनी पैदा होती है। मोर अनगिनत ज्ञान, गुण तथा संपदा का रहस्यमय खजाना है। इसी कारण वह हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी बना हुआ है।

बच्चे की वाणी का क्रमिक खुलना चीड़ा-चीड़ी की चहक और चहलकदमी से ही प्रारंभ होकर विकास की गति पकड़ता है। पालने में जब बच्चा सुलाया जाता है तब उसकी निगाहें भी उसकी डोरों से लिपटे रंगबिरंगी चीड़ा-चीड़ी की ओर ही केन्द्रित रहती है और उन्हीं को देख-देख वह रंजित हुआ मन ही मन मरक-मरक मुस्कान मारता है।

कुशल गृहिणियां अपने कुशाग्र कला-कौशल से कपड़े की खोल बना उनमें रुई भरकर हू-ब-हू जो चीड़े-चीड़ी बनाती हैं वे बेजान होकर भी असल को मात देने वाले होते हैं। भांत-भांत के कपड़े की किनारियों से निकाली उनकी खूबसूरत चोंचें और उनके दांई-बांई ओर लगी काली-काली आंखें ऐसा दरसाव देती हैं जैसे वे किसी डाल पर बसेरा किये चहचहा रहे हैं। उनके बीच हराकच लाल चोंच निकाले मीठू, आत्माराम, सुआराम, तोतामल (तोते के विभिन्न नाम) की उपस्थिति से जो सुषमा मंडित होती है वह उस बाल-मन की सौंदर्यजनित चेतना का बोध-बंध है। महाकवि सूरदास ने 'जसोदा हरि पालने झुलावै' नामक पद में अपनी अंधी आंखों से उसका जो वर्णन किया है, वैसा लाख-लाख, करोड़-करोड़ खुली आंखें भी आजतक नहीं कर पाई।

कहना नहीं होगा कि बच्चे की पलकें ज्यों-ज्यों पुलकित होती रहती हैं, उसकी अभिव्यक्ति का अनुभव विस्तार पाता है। फिर गुरु-ज्ञान की प्राप्ति के लिए वह स्कूल में प्रवेश करता है, अच्छा इंसान बनने के लिए, श्रेष्ठत्व की प्राप्ति के लिए।आत्मा अमर होती है। नश्वर तो शरीर होता है। आत्मा नया-नया शरीर धारण करती रहती है। आयुष्य पूर्ण होने पर यमदूत आकर पकड़ ले जाते हैं। मनुष्य के कर्मों का सारा लेखाजोखा यमराज रखता है। कभी-कभी चूक होने पर यमराज के दूत भूल या भ्रमवश अन्य व्यक्ति को पकड़ ले जाते हैं किंतु जब उसका यमलोक में लेखा देखा जाता है तो उसे पुन: धरती पर भेज दिया जाता है। मरा हुआ व्यक्ति जब पुन: जीवित हो उठता है तब समझ लिया जाता है कि उसके जीवित रहने का समय है। मुझे अपनी शोध-यात्राओं में ऐसे कई व्यक्ति मिले जो मर कर पुन: जीवित हुए और वे बाद में बीस, तीस, चालीस वर्ष तक जीवित रहे।

- शेष पृष्ठ पांच पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 नवंबर 2024

सम्पादकीय

फरै सो चरै, बंध्यो भूखा मरै

फरै सो चरै, बंध्यो भूखा मरै अर्थात् जो हलन-चलन करता है, चलता-रहता है उसे प्राप्ति होती रहती है। वह भूखा नहीं रहता किन्तु जो बंधा हुआ है, बंधन में अर्थात् ठाला बैठा है उसे कुछ प्राप्ति नहीं होती। वह भूखा ही रहता है। इसके आधार पर समग्र जीवों को यदि हम देखें तो सभी अपनी उदरपूर्ति के लिए कुछ न कुछ परिश्रम अवश्य करते हैं।

मोटे तौर पर जलचर, नभचर और थलचर प्राणियों को लें तो हमें पता चलता है कि स्थिर कोई नहीं रहता। सभी जीवों का स्वभाव स्थिर रहना भी नहीं है। चलते रहो, समूह में या फिर अकेले भी। कुछ-न-कुछ प्राप्त होगा ही। इसी सोच ने आदमी को बड़ा बनाया है। विकास का पथ प्रशस्त हुआ है। नई-नई खोजें हुई हैं और सृष्टि का पहिया कभी थमा नहीं है।

कभी-कभी कार्य करने की, जीवनधर्मिता की शैली बदल जाती है। समय के बदलाव के साथ कहें या परिस्थिति की मजबूरी कहें या फिर होड़ाहोड़ी का दर्शन-प्रदर्शन ; व्यक्ति की कार्यशैली अचानक बदलती पाई जाती है और धीरे-धीरे ऐसी कुछ मजबूरी देखने को मिलती है कि मनुष्य के बूते के बाहर की चाज हो जाती है। वह चाहे तो भी अपनी चाह के अनुसार नहीं कर सकता।

अधिक पीछे नहीं जायें तो भी आजादी के पहले का समय जिन्होंने देखा है, गृह की स्वामी महिला होती थी। वह घर-गृहस्थी की मुख्य धुरी होने के कारण सर्वाधिक श्रमशील रहती। हर कार्य के पीछे उसकी भूमिका मुख्य रहती। सारे संस्कारों की बात करें तो उनमें भी महिला ही प्रमुखता लिए रहती।

आजादी के बाद सर्वाधिक असर महिलाओं पर पड़ा। उन्होंने घर की चारदीवारी से बाहर आकर मुक्त स्वांस लिया। घूंघट में अपना मुख ही नहीं, अन्य परिधानों से भी अपने लुकेछिपे बल्कि नजरबंद शरीर को स्वच्छन्द किया। घर के सारे कार्यों से भी उसे कई तरह से मुक्ति मिली। पहले घर का सारा कार्य महिलाएं करती थीं। गिनती करें तो पता चलेगा, बाहर से कोई कार्य नहीं के बराबर होता था पर अब सारे कार्य बाहर ही होते दिखाई देते हैं। यहां तक कि प्रतिदिन घर का खाना भी सुस्वादु नहीं लगने लगा है। पहले घट्टी पीसने, कपड़े धोने, रसोई करने, सिलाई करने से लेकर हर मौसम के अनुसार खाने-पीने की चीजें तैयार करने के लिए जमीनी बैठक मुख्य रहती थी पर अब वे सब कार्य नहीं रहे और जो कुछ करने पड़ रहे हैं वे खड़े-खड़े रहने, करने से जुड़ गये हैं इसीलिए महिलाओं में अधिकतर पांव से जुड़ी, घुटनों, पगथलियों की बीमारी घर कर रही है।

पहले शिक्षा भी जैसी भी थी, श्रवणकारी मुख्य थी। अब श्रवण यानी कान से हट कर दृश्य यानी आंख से अधिक जुड़ गई है। सुनकर याद रखने की ही विशेषता हमारी परम्परा रही और श्रुतधर्म, श्रुतसाहित्य की प्रमुखता रही पर अब सारी विद्या लेखन में, पोथियों में, ग्रंथों में आ समाई है। यह सब समय की बलिहारी है। हमारे हाथ में कुछ नहीं रहा। हम परिस्थिति के दास बने हुए हैं।

डॉ. धींग अमर श्रुत सेवा से सम्मानित

बेंगलुरु (ह. सं.)। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, राजाजी नगर, बेंगलुरु में 6 नवंबर को आयोजित ज्ञान पंचमी समारोह में साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को गुरु अमर श्रुत सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रवर्तक

अमरमुनि संयम अमृत वर्ष के उपलक्ष्य में यह राष्ट्रीय सम्मान अखिल भारतीय गुरु अमर संयम अमृत वर्ष महोत्सव समिति द्वारा प्रदान किया गया। उपप्रवर्तक पंकजमुनि की निश्रा में अध्यक्ष प्रकाशचंद चाणोदिया, मोक्षद्वार (पाक्षिक) के संपादक गौतमचंद ओस्तवाल एवं अतिथियों ने डॉ. धींग को मुक्ताहार, शॉल, पाग, आगम, प्रशस्ति पत्र और सम्मान-राशि से सम्मानित किया।

डॉ. श्वेता राठौड़ ने डॉ. धींग का परिचय दिया और वीडियो के जरिये उनकी उपलब्धियां बताईं। प्रणत धींग ने डॉ. दिलीप धींग की कविता सुनाकर सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. वरुणमुनि ने प्रणत की प्रभावी प्रस्तुति की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि श्रुताचार्य अमरमुनि की प्रेरणा से प्राकृत भाषा के जैन आगमों का हिंदी व अंग्रेजी अनुवाद के साथ पहली बार सचित्र प्रकाशन हुआ। उनकी स्मृति में श्रुतसेवी डॉ. धींग को प्रथम सम्मान गौरव की बात है। मंत्री नेमीचंद दलाल ने संचालन किया। इस अवसर पर मानवता की सेवा में तत्पर भगवान महावीर जैन हॉस्पिटल, बेंगलुरु का संस्थागत श्रेणी में सम्मान किया गया। समारोह में देश के विभिन्न प्रांतों से आए श्रद्धालुओं सहित बड़ी संख्या में श्रावक श्राविका उपस्थित थे।

पारंपरिक परिधान संस्कृति शिल्पकला का प्रतीक

- डॉ. डॉली मोगरा -

भारत अपने फैशन और परिधान संस्कृति के लिए विश्व में विशेष स्थान रखता है। यहां की पारंपरिक वेशभूषाएं केवल वस्त्र नहीं, बल्कि संस्कृति, परम्परा और शिल्पकला का प्रतीक हैं। भारतीय परिधान में विविधता और गहराई न केवल विभिन्न राज्यों की संस्कृतियों को जोड़ती है बल्कि हमारे देश की अस्मिता का प्रतीक है।

भारतीय परिधान की जड़ें काफी गहरी और प्राचीन है। सिंधु घाटी सभ्यता की बात करें तो इस सभ्यता में पाए गए चित्र और मूर्तियाँ दर्शाती हैं कि भारत में वस्त्र निर्माण की एक प्राचीन परम्परा रही है। यहीं से भारत का कपड़ा उद्योग पनपा, जिसने समय के साथ विभिन्न प्रकार की शैलियों और वस्त्रों को जन्म दिया। साड़ी, धोती, कुर्ता, और पगड़ी जैसे परिधान प्रारम्भिक काल से ही प्रचलित थे जिसे धीरे-धीरे भारतीय समाज के हर वर्ग भी अपनाया।

भारत का प्रत्येक राज्य अपने विशेष परिधान और कपड़ा शिल्प के लिए जाना जाता है। राजस्थान का गेरुआ रंग, लहरिया प्रिंट, और बांधनी बंधेज कला ने भारतीय फैशन में एक गौरवशाली स्थान पाया है।

उत्तर भारत की बात करें तो यहां की बनारसी साड़ी, सलवार-कुर्ता, और कश्मीरी फेरन जैसे परिधान जग प्रसिद्ध हैं, तो गुजरात का घाघरा-चोली और कच्छ की कढ़ाई, विशेषकर मिरर वर्क, विश्व प्रसिद्ध है।

दक्षिण भारत की कांजीवरम साड़ियाँ, अपने विशेष रेशम और जरी वर्क के कारण हर वर्ग में सम्मानित मानी जाती हैं। इन विविध परिधानों के माध्यम से हर राज्य की संस्कृति और जीवनशैली को दर्शाया जाता है। ये परिधान केवल सौंदर्य के ही प्रतीक नहीं हैं, बल्कि ये भारत की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक भी हैं।

भारतीय परिधान अक्सर धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताओं से भी जुड़े हैं। उदाहरणस्वरूप साड़ी का पल्लू सिर पर रखना सम्मान और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। भारतीय परिधान में रंगों का भी विशेष महत्व है, जैसे कि विवाह के समय लाल रंग को शुभ माना जाता है और सफेद को शांति का प्रतीक। वस्त्रों पर होने वाली कढ़ाई, रंगाई, और बुनाई में भी एक आध्यात्मिक संदेश निहित होता है, जो दर्शाता है कि वस्त्र केवल शरीर को ढकने का साधन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में आदर और भावना का प्रतीक भी हैं।

भारतीय परिधानों ने न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक फैशन में भी अपनी छाप छोड़ी है। भारतीय साड़ियों, सलवार-कुर्तों, और जूतियों को अंतर्राष्ट्रीय फैशन शो में प्रस्तुत किया जाता है। अनेकों अंतर्राष्ट्रीय डिजाइनरों ने भारतीय शिल्प, जैसे कि ज़री, मिरर वर्क, और कच्छ की कढ़ाई को अपनाया है। फैशन हाउसेस ने भी भारतीय फैशन से प्रेरित होकर विभिन्न प्रकार के फ्यूज़न परिधानों को डिज़ाइन किया है, जो आधुनिकता और परंपरा का एक अनोखा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय फैशन युवा पीढ़ी के साथ जुड़ने का प्रयास कर रहा है, वहीं आधुनिकता के साथ तालमेल बिठाते हुए भी भारतीय परिधान अपनी मूल परम्परा से जुड़े हुए हैं। भारतीय फैशन में फ्यूज़न स्टाइल का चलन है जहाँ साड़ी को बेल्ट के साथ, कुर्ते को जीन्स के साथ और पगड़ी को वेस्टर्न परिधानों के साथ पहना जाने लगा हैं। ये ही कारण हैं कि इस तरह के प्रयोग युवा पीढ़ी को अधिक आकर्षक बना रहे हैं।

भारतीय परिधान में हस्तकला और हथकरघा का अद्वितीय स्थान है। भारत के विभिन्न हिस्सों में हथकरघा उद्योग ने ना केवल स्थानीय कारीगरों को आजीविका प्रदान की है बल्कि ये कला भारत के कपड़ा उद्योग की रीढ़ बना हुआ है। छत्तीसगढ़ का कोसा सिल्क, बिहार के मधुबनी प्रिंट्स और राजस्थान के बंधनी और लेहरिया डिज़ाइन आज भी हस्तकला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी प्रयासरत है ताकि भारत की परम्परागत कपड़ा कला जीवित रह सके।

भारतीय फैशन का भविष्य न केवल आधुनिकता की ओर उन्मुख है, बल्कि यह अधिक टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल भी बन रहा है। भारतीय फैशन उद्योग धीरे-धीरे प्राकृतिक रंगों, जैविक कपड़ों और पुनर्चक्रण की अवधारणा को अपना रहा है। यह न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को भी विश्वस्तर पर प्रस्तुत करता है। भारतीय परिधान और फैशन केवल वस्त्र नहीं, बल्कि एक संस्कृति का प्रतीक है जो समय के साथ बदलता है, विकसित होता है, लेकिन अपनी जड़ों से कभी अलग नहीं होता। आज भारतीय परिधान और फैशन ने न केवल भारत में बल्कि विश्वस्तर पर भी अपनी एक खास पहचान बनाई है। यदि कहा जाए कि भारतीय परिधान और फैशन संस्कृति, परम्परा और विविधता का संगम है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

पोथीखाना

'बच्चों का देश' बाल मासिक की रजत-यात्रा का स्वर्णिम दस्तावेज

- डॉ. दिलीप धींग -

बच्चों का संसार बड़ा प्यारा और न्यारा होता है। जैसा बच्चों का संसार, वैसा ही उनका साहित्य और उनके लिए लिखा गया साहित्य भी दिलचस्प होता है। यदि अच्छे बाल-साहित्य के प्रति ईमानदारी से ध्यान दिया जाए तो यह राष्ट्र निर्माण में बुनियादी भूमिका निभाता है। गंभीर और दार्शनिक साहित्य से हटकर बाल साहित्य बालकों जैसा ही सरल-तरल और उमंग से भरा होना चाहिये। सरल साहित्य लिखना शायद उतना ही कठिन है, जितना सरल होना। बालमन को समझने वाला रचनाकार ही बच्चों के लिए प्रबोधक, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक लिख सकता है।

लिखने वाले लिख भी दे तो बच्चों तक वह साहित्य पहुँचाए कौन? बाल पत्रिकाएँ यह कार्य कर सकती हैं। मौजूदा डिजिटल दौर में किसी बाल पत्रिका का नियमित प्रकाशन और उत्साहवर्धक प्रसार संख्या के साथ उसका देश-विदेश में प्रतिमाह वितरण चुनौती भरा, किंतु अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है। ऐसा सारस्वत कार्य यदि ढाई दशक से निरंतरता बनाए हुए है तो यह निश्चित ही अभिनंदनीय है। यह शानदार रजत-यात्रा पूरी की है राष्ट्रीय बाल मासिक 'बच्चों का देश' ने। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा), राजसमंद (राजस्थान) से अक्टूबर-2024 में इस बालपत्रिका का बहुरंगी रजत जयंती विशेषांक प्रकाशित हुआ है।

किसी बाल पत्रिका की शुरूआत और उसे सफलतापूर्वक निरंतर बनाए रखने में कितने महानुभावों का संकल्प, परिश्रम और आशीर्वाद जुड़ा होता है, इसे जानने के लिए इस विशेषांक में प्रकाशित 'सफर 25 वर्षों का ..' पठनीय है। 53वें स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त 1999 को प्रख्यात बालसेवी मोहनलाल जैन (मोहन भाई) ने भागीरथी सेवा संस्थान, जयपुर से इसका शुभारंभ किया था। मोहनभाई के पवित्र संकल्प के साथ उनके परिवार की निष्ठापूर्ण सेवाएं भी इससे जुड़ीं।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का मंगल आशीर्वाद भी इसे मिला और मिल रहा है। अपनी गुणवत्ता और उद्देश्यपरकता के कारण यह पत्रिका समाज से भी प्रचुर स्नेह व सहयोग पा रही है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यह पत्रिका बच्चों, अभिभावकों और शिक्षक वर्ग द्वारा खूब पसंद की जाती रही है।

बाल पत्रिका होने के बावजूद यह युवाओं और बड़ों को भी उपयोगी पठनीय सामग्री उपलब्ध कराती है। हर परिवार और विद्यालय में 'बच्चों का देश' जैसी साफ-सुथरी पत्रिका पहुंचनी चाहिये। अभिभावकों और शिक्षकों को चाहिये कि वे बच्चों को ऐसी पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा दें।

जो बालक-बालिकाएं अच्छी पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों से दोस्ती रखते है, वे अपने जीवन में आत्महत्या और अपराध जैसे गलत कदम उठाने से बच सकते हैं। व्यवस्था के लिए कानून आवश्यक है, परंतु व्यक्ति के सद्गुण और सुसंस्कार ही उसे संकट से बचा सकते हैं। बचपन और किशोरावस्था में सुसंस्कारों के बीजारोपण में ऐसी पत्रिकाएँ प्रभावी भूमिका निभा सकती है। वस्तुत: बच्चों के जीवन-निर्माण और बच्चों के साहित्य-निर्माण के लिए किया गया खर्च, खर्च नहीं, अपितु निवेश होता है।

राष्ट्रीय और मानवीय भावनाओं की संवाहक लोकप्रिय बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' के इस ढाई सौ पृष्ठीय विशेषांक में सभी वर्गों और क्षेत्रों के लगभग दो सौ रचनाकारों से रूबरू होना सचमुच एक सुखद अहसास है। लेख, कहानी और कविता के अतिरिक्त बालकोपयोगी विविध प्रकार की सामग्री से यह विशेषांक सज्जित और सुरभित है।

संपादक संचय जैन, सहसंपादक प्रकाश तातेड़, अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा और उनकी टीम के अथक श्रम का सुफल है यह विशेषांक। 'बच्चों का देश' पत्रिका की सफल रजत-यात्रा का स्वर्णिम दस्तावेज है यह सुंदर संग्रहणीय विशेषांक। विश्वास किया जाना चाहिये कि यह विशेषांक बाल पत्र-पत्रिकाओं और बाल साहित्य जगत में अपना विशेष स्थान बनाएगा।

गर्भाधान से लासण.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

गर्भावस्था में गर्भचिंतारणियां :

किसी के जन्म से तात्पर्य गर्भ से बाहर आना नहीं अपितु गर्भावस्था प्राप्त करने किंवा गर्भ में आने से है। नौ माह गर्भकाल में रहने का जीवन कम महत्वपूर्ण नहीं होता। उस दौरान माता से जैसा खानपान, सोच, समझ, संस्कार उस नवजात को प्राप्त होता है वही उसकी नींव का मजबूत सोपान बनता है। यही प्रबल सोच लिए गर्भवती महिलाओं को गर्भ चितारणियां सुनाई जाती हैं। इन गर्भ चितारणियों में नवजात मानवी को बच्छे-बुरे जीवन की वरणना द्वारा सत्कर्म करने करने की चेतना दी जाती है। गर्भकाल में जीव की अवस्था के साथ-साथ उसे उसके पूर्वभव की दास्तान सुनाकर ठाठबाट का जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है। उसके स्वभाव, कर्म तथा व्यवहार को लेकर भी दो टूक बात कही जाती है। उसके समृद्ध तथा एश्वर्यपूर्ण जीवन का दिग्दर्शन करने के साथ बोदे (बुरे) चरित्र एवं खोटे कार्य की फटकार और प्रताड़ना भी दी जाती है। बुरे कार्य के लिए दुत्कारा जाता है। उदाहणार्थ-

नर नारी रे मिल्या रे संजोग
भोगरया संसार्‌या रा भोग
कांसे जो आया गरभ के मांय
नीचा रे मस्तक ऊंचा जो जो पांय
ग्रभवती ओ नारी सेवती।

नर-नारी का संयोग मिला तो संसार के भोग भोग रहे। रे जीव! तू कहां से आया गर्भ में! नीचा सिर और ऊंचा पांव। गर्भवती नारी तुम्हारी देखभाल कर रही।

दासी तो थारे ऊभी कर जोड़
एके बुलावे ने दस आवे दोड़
परबला ओ पन्न परताप सूं।

दासी तुम्हारे हाथ जोड़े सेवा चाकरी में खड़ी है। एक को बुलाने पर दस दौड़ आती हैं। तुम्हारे पूर्वजन्म के प्रताप से ही तुम्हें यह सुख सुविधा उपलब्ध है।

गेणा रा डाबा ने रतनां री कोत
लाग रही थारे जगमग जोत
थूं चेते उचेते मानवी।

रे मानवी! गहनों का पिटारा और अकूत रत्नों का जगमगाता प्रकाश तुम्हें नसीब हो। तू चेतनशील बन।

कारा भमर थारे होता जी केश
दन दन करतो नवा नवा वेश
सैल सपाटा सरतो घणो।

हे जीव! पूर्वजन्म में घने काले तुम्हारे बाल और प्रतिदिन बदलता नया भेष धारण किए तू बहुत अधिक सैर सपाटा करता रहता।

चालतो नरखतो आपणी पाग
तीज मतासे ने देखतो बाग
माता-पिता नहीं पूछतो।

तू चलते रास्ते अपनी पगड़ी निरखता। तीज त्यौहार पर बागों में मौज करता किंतु माता-पिता की खोज खबर तक नहीं लेता।

देतो रे ताण मरोड़तो मूंछ
हाथी ने घोड़ा री पकड़े पूंछ
धरम वना थारो कई होसी।

मद में चूर हो तू अपनी मूंछ पर ताव देता। हाथी घोड़े की पूंछ पकड़ अपने ऐश्वर्य की समृद्धि देता। धर्म बिना तुम्हारा क्या होगा?

रतना रा प्याला ने सोना रा थाल
मूंग मिठाई ने चावल दाल
भोजन भल भल भांत रो।

सोने के थाल और रत्नों के प्यालों में मंहगी मिठाई और चावल दाल का, भांति-भांति का स्वादिष्ट भोजन करता।

गंगा जल पाणी दीधो रे ठार
वस्तु मंगावो ने तुरत तयार
कभी ए नहीं कणी वात री।

तेरे लिए गंगाजल की कोई कमी नहीं रहती। जो चीज मांगता तुरन्त हाजिर होती। किसी बात की कमी नहीं रहती।

परबारी जावे थारी पंचां में साक
दंडत फंडत काटे जी नाक
लोगां माई फट फट करे।

खोटे कर्म से पंचों से तेरी पैठ चली गई। दंड स्वरूप तेरी नाक काट दी गई। सभी ओर तू निंदा का पात्र बना रहा।

असी कणी थने दीधी रे सीख
भव भव माय तू मांगसी भीख
थूं चेते उचेते मानवी।

ऐसी शिक्षा तुम्हें किसने दी? हर भव में तू भिक्षा मांगता रहा। तू अब भी संभल जा।

हालरा हालरिया :

जन्म से लेकर जब तक बच्चा घड्‌ये-घड्‌ये (घुटनों के बल) चलता है तब तक उसकी विशेष देखभाल की जाती है। इस अवस्था में वह टग्गी (जिद्द) पकड़ता है और मां के चिपका ही रहना चाहता है। वह अपने को असुरक्षित भी समझता है। इस समय उसे थपकी देकर, घोड़े लेकर (घुटने के बल सुलाकर) या फिर पालने में हींदा (झूला) देकर झुलाया जाता है। सुलाते समय लोरी गीत गाये जाते हैं। यह अवस्था अमुमन छह माह तक की होती है।

लोरी गीत मेवाड़ में हालरा नाम से जाने जाते हैं। इन्हें हालरिया तथा पालणा भी कहते हैं। इस समय के गीत छोटे-छोटे और बालमन को बहलाने वाले होते हैं। इन गीतों में बालक के स्वभाव, उसका पालन पोषण, पहनावा, खानपान, दैनिक चर्या तथा अधिक रोने पर उसे डराने धमकाने के प्रसंग भी मिलते हैं। कुछ गीत यहां द्रष्टव्य हैं-

(1)

हालर हूलर हांसी रो
दूध पावे थारी मासी रो
लाल चूड़ो थारी भुवा रो
हुई जा रे नान्या हुई जा.....

हालर हूलर (धीरे-धीरे झूला देने की क्रिया) तेरी हंसी के लिए। रोते हुए बच्चे को मुस्कान दिलाने के लिए 'हालर हूलर हांसी रो' पंक्ति भी प्यार भरे स्नेहिल ढंग रंग से उच्चरित की जाती है। दूध पिलाने के लिए मासी (बच्चे की माता की बहिन) की यादगार भी प्रासंगिक है। जिस बच्चे की छोटी उम्र में माता चल बसती है उसका लालन पालन मासी (मौसी) द्वारा किया जता है। ऐसी स्थिति में मौसी ही उसे अपना स्तन पान कराती है और मातृत्व सुख एवं सुरक्षा प्रदान करती है। इसीलिए मासी को 'मासी मां' भी कहा जाता है। मौसी को मां का दर्जा दिया गया है।

लोरी गीतों के साथ-साथ टोपी गीत भी गाये जाते हैं। झगला टोपी बच्चों का खास पहनावा रहा और समधियों द्वारा भी बच्चे के लिए लाये जाते हैं। मासी की अनुपस्थिति में बुआ ही उसकी मुख्य पालक होती है इसीलिए बुआ को लाल चूड़ेवाली अर्थात् सौभाग्यवती कहा गया है। लाल रंग सौभाग्य का सूचक है। लाल चूड़ा, लाल बिंदी, लाल पोशाक सौभाग्यवती नारी का श्रृंगार है। जैसे मासी बच्चे की माता की बहिन होती है वैसे ही भुआ (बुआ) बच्चे के पिता की बहिन को कहते हैं। यह रिश्ता खून-संबध का भी परिचायक है। मासी मां की तरह बुआ के साथ भी मां का संबोधन ' भुआ मां' के रूप में प्रचलन में है। सोजा रे नन्हा सोजा पंक्ति बाल मनोभाव की दृष्टि से यह ध्वनित करती है कि धीरे-धीरे बच्चा रोना बंद कर सो जाएगा।

(2)

सुईजा रे नान्या सुई जा
थारी मावड़ पाणी गी
घर में गंडकड़ा वारी गी
एक गंडकड़ो घटीग्यो
नान्या रो नाक कटीग्यो

सोजा रे नन्हा सोजा। तेरी माता पानी लेने गई। घर में कुत्ते छोड़ गई। एक कुत्ता घट गया, कम हो गया। नन्हे का नाक कट गया।

(3)

नानो तो दोड्‌यो नाना रे जा
नाना रे जावे ने घी खीचड़ी खा
नानी दीधी कुतरी गा
मामा रे मामा दूधड़लो दूं
मामी मसल्यो कानड़ो क्यूं

नन्हा दौड़कर नाना (बच्चे की मां के पिता) के घर गया। नाना ने घी-खीचड़ी खाने को दी। नानी (बच्चे की मां की मां) ने कटे कान की गाय दी। मामा (बच्चे की मां का भाई) ओ मामा दूध निकाल। मामी (मामे की बहू) ने मेरा कान क्यों मसला?

(4)

नानो तो छे भयां को
दूध पीवे दस गायां को
गायां कीधो पोटो
नान्या रे कई टोटो
हलवो पूड़ी खावो सा
नान्या ने परणावो सा

नन्हे (नवजात) के छह भाई हैं। वह दस गायों का दूध पीता है। गायों ने गोबर किया। नन्हे को किसकी कमी? हलुआ पूड़ी खाओ। नन्हे का ब्याह रचाओ।

(5)

नान्या थारे पालणो गलादे सामी पोल
आवतड़ा जावतड़ा थारा दादा झूलो देवे रे
हूल रे नाना हूल रे.....
थारे सोना रा झांझरिया
थारे रेशम री गज डोर
लालजी हूल रे नाना हूल रे.....

इस गीत में बच्चा अपनी माता के श्वसुर गृह में पल रहा है इसीलिए बच्चे का पालना सूर्य के सामने वाली पोल अर्थात् पूर्व दिशा के निवास में है। यहां आते-जाते, चलते-फिरते दादा उसे झूला दे रहे हैं और गा रहे हैं- सोजा नन्हा सोजा। पांवों में तुम्हारे सोने की नन्ही-नन्ही झांझरियां पहनी हुई है। पालना (झूला) में रेशम की डोर से बंधा है। सोना और गजडोर अति लाड़ प्यार, समृद्ध एवं सम्पन्नता की सूचक है। दादा से तात्पर्य नन्हे के पिता के पिता से है। यह नन्हा दादाजी के पुत्र का पुत्र यानी पौत्र है जो लोकांचल में पोता नाम से जाना जाता है।

अब तक के लोरी गीतों में बच्चे की माता के पीहर-परिवार के नाना-नानी, मामा-मामी का जुड़ाव दिखाई दिया। सुना भी है लड़की अपने माता-पिता के वहीं शिशु जन्म देना चाहती है। यों प्रथम संतान का जन्म तो वहीं होने का रिवाज भी है।

लोरी गीत केवल बच्चों का ही मन बहलाव नहीं करते, बड़ों की ममता के भी संबल होते हैं। मेरी अपनी ही बात कहूं। दिसम्बर 1960 में मैं भारतीय लोककला मंडल में रहते मणिपुरी आदिम जातियों के सर्वेक्षण के लिए मणिपुर गया। वहां के उखरूल के डाक बंगले में भोर में कोई चार बजे अचानक मेरी नींद उड़ी और मां की याद सताने लगी। यह याद ऐसी बनती गई कि मेरा रूदन रोके नहीं रूका। ऐसी स्थिति में मैंने कागज पैंसिल उठाई और सुबक-सुबक आंसू बहाते लोरी गीत लिखा तब जाकर मुझे शांति मिली और लगा कि मुझे मेरी मां मिल गई।

इस समय मेरी 23 के करीब उम्र थी और पहली बार इतनी दूर लम्बे समय के लिए निकला था। अविवाहित था और घर में मां ही सर्वेसर्वा थी। दादा, पिता, चाचा सब स्मृति शेष हो गए थे। मैं गीत की पंक्ति लिखता जाता और फूट-फूट कर रोता रहता। ऐसे रूदन के दौरान मैंने गीत पूरा किया। यह गीत चार चरण लिए है। यहां उसका प्रथम तथा तृतीय चरण प्रस्तुत है-

आकास्या पर काकास्या थारा वानर ताड़े रे
कोचला बीजू खावे रे
गंडकड़ो पूंछ हिलावे रे
मिनक्यां लड़ मुळकावे रे
चिड़कल्यां चुग्गो लावे रे
चिड़कला चोंच लड़ावे रे
नान्या सुई जाजे। (प्रथम चरण)
हलरावे दुलरावे थारी
मायलड़ी हिंचावे
हाथ पगां मूंडा पर थारे
मामा आंख मिंचावे
हुलहुल हालर गावे रे
सोगन गंगा जावे रे
अंगूठो थूं क्यूं धावे रे
कई थारे मन में आवे रे
नान्या सुई जाजे। (तृतीय चरण)

आकास्या (चांदणी अर्थात् छत की नाल को ढकनेवाला स्थान) पर तुम्हारे काकास्या (काकासा अर्थात् पिता) बंदर भगा रहे हैं। बिज्जू (नेवले जैसा जानवर) कोचला (कद्दू की पतली-पतली चीरें, फांकें जो सूखने के बाद कोचला कहलाती हैं। यह बिज्जू अर्थात् वेरबला को बेहद प्रसन्न है) खाती है। कुत्ता पूंछ हिलाता है। बिल्लयां आपस में झगड़ मुस्कराती हैं। चिड़ियां चुग्गा लाती है। चीड़े चोंच लड़ाते हैं। नन्हे सो जाना।

हलरा हुलरा कर तेरी माता झूला रही है। हाथ, पांव, मुंह पर मामे (ऊंगली से काजल के निशान ताकि नजर नहीं लगे) शोभित हैं। माता हुलहुल हालर गा रही है। सौगंध गंगा जा रहे हैं। तू अंगूठा क्यों चूस रहा है? तेरे मन में क्या आ रहा है? नन्हे सो जाना।

अब मेरी मां नहीं रही तब भी मैं इस गीत को गाकर महसूस करता हूं कि मैं मां की गोद में हूं। वह मुझे अपनी थपकियों से सुला रही है और मैं मुस्करा रहा हूं।

रूदन बलवर्धक :

रूदन बच्चों के लिए बलवर्धक कहा गया है। यह रूदन उन्हें शक्ति देता है। इसीलिए 'बालानाम् रोदनं बलम्' कहा जाता है। प्रसिद्ध बालरोग विशेषज्ञ डॉ. डी.के. आमेटा ने मुझे बताया कि बालजन्म के बाद हर बच्चा रोता ही रोता है। अपवाद स्वरूप ही कोई बच्चा नहीं रोता है तब न केवल उसके अभिभावक अपितु डाक्टर तक चिंतित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में उसे रूलाने की कोशिश की जाती है।

डॉ. आमेटा ने बताया कि जब वे डूंगरपुर हॉस्पिटल में थे तब गलियाकोट के एक बोहराजी उनके पास एक नवजात को लेकर आए। जन्म के बाद चार घंटे व्यतीत हो गये। नवजात ने रोने की कोई हरकत नहीं की तब मैंने उनसे कहा कि मैं प्रयत्न कर सकता हूं पर बच्चे का जीना, नहीं जीना ऊपरवाले के हाथ है। बोहराजी क्या करते, असहाय थे। मैंने भगवान को स्मरण करते हुए एक इंजेक्शन लगाया। देखते-देखते बच्चे ने रोना प्रारंभ कर दिया। मेरे लिए भी वह अनहोनी तथा अजूबी घटना थी। इससे भी अधिक अजूबापन यह रहा कि वह बच्चा रोता ही रहा। लगभग चार घंटे बाद उस रोते हुए बच्चे को बोहराजी पुन: मेरे पास लाये। मैंने उन्हें दिलासा देते हुए संतुष्ट किया कि जब रोते-रोते बच्चा थक जाएगा तब स्वत: ही रोना बंद कर देगा, और यही हुआ। बोहरा परिवार तो इतना प्रसन्न हुआ कि जब भी वे दुबई से आते, मुझसे मिलने अवश्य आते और उस बच्चे को भी साथ लाते। यह घटना लगभग 25 वर्ष पुरानी है। सन् 2011 में 69 वर्षीय डॉ. आमेटा का भी निधन हो गया।

मास्या बच्चे :

साधारणतया नौ माह गर्भावस्था भोगने के बाद बच्चा पैदा होता है। पांच माह, छह माह पूरे होने पर यदि गर्भ गिर जाता है तो पांच मास्या, छह मास्या गर्भ गिरना कहते हैं। ऐसी स्थिति में कोई बालक जीवित नहीं रहता है। सात माह में सात मास्या होने पर बच्चा जीवित रह जाता है। उसे रूई की पहल में ढककर रखा जाता है। बिना किसी बाधा, परेशानी अथवा शंका रहित जो बच्चा राजीशुखी पैदा होजाता है उसके लिए कहा जाता है कि हाकेताके होगया। तब बाहरवालों या पड़ोसियों को कोई सूचना नहीं देकर उसके जन्म की बात छिपाकर ही रखी जाती है।

किसी को पता भी चल जाता है तो केवल यही कहकर सूचना दे दी जाती है कि वह हाकेताके होगया। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत को भी इसी प्रकार छिपाकर रखा गया। जब जन्म की बात छिपी नहीं रही तब कहा गया कि लड़की ने जन्म लिया है। यह बताने के लिए उनके नाक में छोटी सी चांदी की नथ भी पहनाई गई। आठ मास्या बच्चा जीवित नहीं रहता और यदि रह भी जाता है अपवाद स्वरूप तो वह मंगलिक यानी शुभ नहीं माना जाता। यों दसवें महीने में भी कभी कोई बच्चा जन्म लेता है तो उसे दस मासिया कहते हैं।

डूंटा बच्चा :

किसी बच्चे के जन्म से ही डूंटी (नाभि) की बजाय डूंटा निकल आता है। ऐसी स्थिति में उसके मामा पर भार आ जाता है। तब मामे को बुलाकर पांव के अंगूठे का सात बार हल्का सा स्पर्श कराया जाता है। दो-तीन दिन तक यह क्रिया करने के बाद वह अंगूटा बैठ जाता है। बचपन में मैंने अपने गांव में एक पड़ोसिन की लड़की के डूंटा देखा जो पानीपतासे की तरह फूला हुआ था। तब तीन दिन तक लगातार उसके मामे से पांव के अंगूठे का स्पर्श कराया गया और वह डूंटा धीरे-धीरे बैठ कर सामान्य नाभि की शक्ल में आगया। आज भी जब कभी वह लड़की मिलती है, मैं उसे डूंटेवाली कहकर ही संबोधित करता हूं।

बच्चों के पहली बार मुंह में जो दांत निकलता है वह नीचली पंक्ति पर ही आता है। प्रारंभ में बीचोंबीच दांत निकलता है। कच्चे दांत दूध्ये दांत कहलाते हैं। ऐसे दांत स्थायी नहीं होते। उनकी बजाय दूसरे दांत आते हैं। दूध्ये दांत गिरने पर पड़ोसी के घर के ऊपर फैंक दिया जाता है। माना जाता है कि उसके भी संतान होगी और वह लड़का होगा।

उल्टा बाल जन्म :

बच्चा जब भी गर्भ से बाहर आता है, उसका सिर वाला हिस्सा पहले आता है लेकिन अपवाद स्वरूप उल्टे बच्चे भी पैदा होते हैं। ऐसी स्थिति में उनका जन्म पावं की ओर से होकर अंत में सिर बाहर आता है। ऐसे बच्चों का पांव चलता है अर्थात् जिस किसी को चड़क आ जाती है तब चड़क वाले स्थान विशेष पर ऐसे पैदा हुए के बायें पांव के अंगूठे से सात बार स्पर्श कराया जाता है।

इससे उसकी चड़क जाती रहती है। मेरी माताजी भी चड़क निकालने में माहिर थीं किंतु वह ऊंखल के सहारे चड़क के बोल बोलकर निकालती थी। मेरी नानीजी का जन्म उल्टा हुआ था। उनका पांव बहुत चलता। आये दिन कोई न कोई चड़क का रोगी उनके वहां आता रहता और उनके पांव के अंगूठे के स्पर्श से वह चंगा हो जाता। पूरे गांव में उनकी प्रसिद्धि होने के कारण राजमहलों में भी दो-तीन बार रानीजी की चड़क निकालने के लिए नानी गई थीं। यह बात कोई अस्सी-नब्बे वर्ष पुरानी है। मेरी नानी का स्मरण मुझे भी है। वह छोटी थड़ी की, ठिंगनी महिला थीं। उनकी कमर थोड़ी झुकी हुई रहती थीं और दोनों पांवों में छह-छह अंगुलियां थीं।

बाजार / समाचार

रोबोटिक्स से इलाज प्राप्त मरीजों के लिए हुई वॉकाथॉन

उदयपुर (ह. सं.)। प्रसिद्ध ऑर्थोपेडिक और जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन, डॉ. आशीष सिंघल द्वारा फतहसागर पाल पर वॉकाथॉन का आयोजन किया गया। वॉकाथॉन को मुख्य अतिथि एसीबी डीआईजी राजेन्द्रप्रसाद गोयल, डॉ. आशीष सिंघल ने रवाना किया। वॉकाथॉन में उन मरीजों ने भाग लिया जिन्होंने रोबोटिक्स तकनीक से घुटने की प्रतिस्थापन सर्जरी में सफलता प्राप्त की है। इसका उद्देश्य रोबोटिक तकनीक द्वारा की जाने वाली सर्जरी के अद्वितीय लाभों के प्रति जागरूकता फैलाना था।

वॉकाथॉन के दौरान, मरीजों ने अपनी सफलता की कहानी साझा की और यह दिखाया कि कैसे घुटने की सर्जरी के बाद उनकी जिंदगी बेहतर हुई। रोबोटिक तकनीक के माध्यम से की जाने वाली घुटने की प्रतिस्थापन सर्जरी ने न केवल सर्जिकल सटीकता को बढ़ाया है, बल्कि मरीजों की रिकवरी समय को भी बहुत कम कर दिया है।

डॉ. आशीष सिंघल ने कहा कि रोबोटिक तकनीक ने घुटने के प्रतिस्थापन सर्जरी में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। यह अधिक सटीकता और तेज रिकवरी सुनिश्चित करता है, जिससे मरीजों को जल्दी से अपने सामान्य जीवन में लौटने का अवसर मिलता है। रोबोटिक घुटना प्रतिस्थापन सर्जरी के लाभों में शामिल हैं- सर्जरी की अधिक सटीकता, जिससे बेहतर परिणाम मिलते हैं। कम दर्द और त्वरित रिकवरी, जिससे मरीज जल्दी सामान्य गतिविधियों में वापस लौट सकते हैं। अस्पताल में कम समय बिताना और संक्रमण का खतरा कम होना। सर्जरी के बाद की जटिलताओं का कम जोखिम।

पारस हेल्थ उदयपुर के फैसिलिटी डायरेक्टर डॉ. एबेल जॉर्ज, ने बताया कि जो मरीज घुटने के गंभीर दर्द और आर्थ्राइटिस से जूझ रहे हैं, उनके लिए रोबोटिक तकनीक से घुटने की प्रतिस्थापन सर्जरी एक सुरक्षित और प्रभावी विकल्प है। इस वॉकाथॉन ने न केवल मरीजों के उपचार की सफलता को मनाया, बल्कि उन लोगों को प्रेरित किया जो घुटने के दर्द से पीड़ित हैं और उन्हें एक दर्दमुक्त जीवन जीने की संभावना दिखायी।

पालीवाल ने अध्यक्ष एवं जावेरिया ने मानद सचिव का पदभार संभाला

उदयपुर (ह. सं.)। दी इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), के उदयपुर लोकल सेंटर, द्वारा वार्षिक साधारण सभा का आयोजन किया गया। आरम्भ में संस्थान के निवर्तमान अध्यक्ष इंजीनियर सी. पी. जैन ने सभी सदस्यों एवं अतिथियों का स्वागत। इंजीनियर पुरुषोत्तम पालीवाल ने वर्ष 2023-2024 में किये गये कार्यों का लेखा जोखा प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर दी इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), के उदयपुर लोकल सेंटर के वर्ष 2024-2026 के लिए इंजीनियर पुरुषोत्तम पालीवाल ने अध्यक्ष पद एवं इंजीनियर पीयूष जावेरिया ने मानद सचिव का पदभार ग्रहण किया साथ ही 2024-2026 के लिए चुनी हुई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इस अवसर पर डॉ. जी रंगनाथन, प्रेसिडेंट, दी इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) एवं इंजी. वी. बी. सिंह नवनिर्वाचित प्रेसिडेंट दी इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) द्वारा भेजे गये आर्शीवचन एवं शुभकामनाओं के विडियो के माध्यम से सभी सदस्यों को दिखाया गया। विभिन्न इंजीनियरिंग संकाय के चुनी हुई कार्यकारी समिति की घोषणा भी की गई जिसमें डॉ अभय कुमार मेहता, श्रिया पांचाल, जितेंद्र मेनारिया, निशा कुमावत, राजकुमारसिंह चौहान, डॉ. अशोक जेतावत, गिरीशकुमार जोशी, प्रकाश सुंदरम, गोपीकांत तिवारी, अजीतकुमार जैन, एल. टी. लोखंडवाला, महावीरप्रसाद जैन, कृष्णकांत शर्मा, लक्ष्मीनारायण कच्छवा, रमेशचंद्र पुरोहित, हितांशु कौशल, पवनकुमार जैन का अभिनन्दन किया गया।

सर पदमपत सिंघानिया विवि का दीक्षांत समारोह सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय का ग्यारहवां दीक्षांत समारोह भव्यता और उत्साह से आयोजित किया गया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन डॉ. निधिपति सिंघानिया ने की। मुख्य अतिथि यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश ने उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और परिणाम आधारित शिक्षा पर जोर दिया।

फिल्म और टेलीविजन अभिनेता अन्नू मदनलाल कपूर, भारतीय राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता सुनील शास्त्री तथा पूर्व कप्तान, भारतीय हॉकी टीम दिलीपकुमार टिर्की समारोह के सम्मानित अतिथि थे। उन्हें अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। जेके सीमेंट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ. राघवपत सिंघानिया, उपाध्यक्ष और शिक्षा प्रमुख, एजुकेशन वर्टिकल, जेके सीमेंट लिमिटेड कर्नल (डॉ.) संजय सिन्हा सहित अन्य गणमान्य लोग दीक्षांत समारोह में सम्मिलित हुए।

अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) पृथ्वी यादव ने विश्वविद्यालय की रणनीतिक उद्योग-अकादमिक भागीदारी, अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता, विश्वविद्यालय रैंकिंग, अन्वेषण अनुसंधान, विश्वविद्यालय के प्रमुख मील के पत्थर और सेंटर्स ऑफ़ एक्सीलेंस पर प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मानित सभा को विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रमुख कार्यक्रमों जैसे वाईपी सिंघानिया मेमोरियल व्याख्यान, संग्यान-ओरिएंटेशन कार्यक्रम, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियो और विश्वविद्यालय की अन्य प्रमुख महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के छात्रों को डिग्रियां प्रदान की गई। बी.टेक (सीएसई) डिग्री प्रोग्राम से जयंतसिंह झाला को चेयरपर्सन गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। सैयद अफरोज हुसैन-एम.टेक (माइनिंग इंजीनियरिंग), जयंतसिंह झाला-बी.टेक (सीएसई) रशीदा अत्तारी-एमबीए, प्रिया चौधरी-बीबीए को प्रेसिडेंट मैडल से सम्मानित किया गया। समारोह में सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, डीन, डिप्टी डीन, फैकल्टी, देशभर की प्रतिष्ठित हस्तियां और मीडिया के लोग उपस्थित थे।

जेके टायर को 144 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय टायर उद्योग की प्रमुख कंपनी, जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड (जेके टायर) ने 3643 करोड़ रुपये के राजस्व पर 144 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है। एबिडिटा 443 करोड़ रुपये एवं कर पूर्व लाभ 199 करोड़ रुपये का रहा।

चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने श्रेणी में कम मांग के बावजूद यात्री कार खंड में अपनी मात्रा और उपस्थिति को बरकरार रखा। वाणिज्यिक वाहन खंड में भी आम चुनाव और असामान्य भारी बारिश के कारण तिमाही के दौरान राजस्व वृद्धि प्रभावित हुई। इस तिमाही के दौरान निर्यात में सुधार से घरेलू मंदी की आंशिक भरपाई करने में मदद मिली। जेके टायर की सहायक कंपनियों, कैवेंडिश इंडस्ट्रीज लिमिटेड (सीआईएल) और जेके टॉर्नेल, मैक्सिको ने कंपनी के समग्र राजस्व और लाभप्रदता में महत्वपूर्ण योगदान देना बरकरार रखा है। जेके टायर एक ग्रीन कंपनी है और 2030 तक कार्बन तीव्रता को 50त्न तक कम करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि गर्व की बात है कि जेके टायर को सतत विकास और सामुदायिक निर्माण की दिशा में अपने समर्पित प्रयासों के लिए प्रतिष्ठित महात्मा अवॉर्ड 2024 से सम्मानित किया गया है।

फ्लिपकार्ट और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने मिलाया हाथ

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने ई-कॉमर्स के माध्यम से हरियाणा की ग्रामीण महिला उद्यमियों को सशक्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के साथ मिलकर ओरिएंटेशन वर्कशॉप का आयोजन किया। ई-कॉमर्स के माध्यम से आर्थिक सशक्तीकरण पर केंद्रित इस कार्यशाला में विद्युत राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर, फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर रजनीश कुमार एवं अन्य उपस्थित रहे। डिजिटल सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए इस कार्यशाला के माध्यम से 70 से अधिक प्रतिभागियों को प्रोडक्ट लिस्टिंग, एफिशिएंट लॉजिस्टिक्स और रणनीतिक कारोबारी विकास से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। इन प्रतिभागियों में महिला उद्यमी, सूक्ष्म उद्यम एवं स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) शामिल रहे। संवाद सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी पहुंच एवं कारोबार बढ़ाने के लिए ई-कॉमर्स से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों को समझने का मौका मिला।

फ्लिपकार्ट ने सप्लाई चेन को बढ़ाया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने इंदौर, मध्य प्रदेश में अत्याधुनिक फुलफिलमेंट एवं सॉर्टेशन सेंटर (एफएससी) खोला है। यह सेंटर 1.59 लाख वर्गफीट में बना है। इस रणनीतिक निवेश से राज्य में डिलीवरी की गति तेज होगी, स्थानीय स्तर पर 600 से ज्यादा रोजगार सृजित होंगे और राज्य के सभी पिन कोड तक डिलीवरी सर्विस उपलब्ध कराई जाएगी। यह सेंटर बुनियादी ढांचे के विकास और स्थानीय प्रगति को लेकर फ्लिपकार्ट की प्रतिबद्धता को दिखाता है। सेंटर की लॉन्चिंग के मौके पर माननीय सांसद शंकर लालवानी, फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर रजनीश कुमार व अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहे। यह सेंटर मध्य प्रदेश में विस्तार करने के फ्लिपकार्ट के प्रयासों की दिशा में उल्लेखनीय कदम है।

फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर रजनीश कुमार ने कहा कि फ्लिपकार्ट पूरे भारत में समावेशी विकास और डिजिटल सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। स्थानीय समुदायों संग हमारे जुड़ाव के साथ-साथ इंदौर, मध्य प्रदेश में नए फुलफिलमेंट सेंटर की लॉन्चिंग सतत विकास को बढ़ावा देने, एमएसएमई को समर्थन देने और स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन की हमारी प्रतिबद्धता दिखाती है। स्थानीय समुदायों को जरूरी टूल्स, बाजार तक पहुंच और मजबूत सप्लाई चेन से लैस करते हुए हम उन्हें सतत आजीविका के सृजन में मदद कर रहे हैं और भारत के व्यापक आर्थिक विकास में सक्रियता से भूमिका निभा रहे हैं। फ्लिपकार्ट लगातार मध्य प्रदेश में अपनी उपस्थिति को मजबूत कर रहा है। इसके प्लेटफॉर्म पर मध्यप्रदेश के 42,000 से ज्यादा सेलर्स जुड़े हैं।

लेनोवो टैबलेट और लैपटॉप पोर्टफोलियों में विस्तार

उदयपुर (ह. सं.)। लेनोवो, ग्लोबल टेक्नोलॉजी पावरहाउस लेनोवो ने आज भारत में लेनोवो के 11 टैबलेट के अपग्रेडेड वैरिएंट के रूप में लेनोवो टैब के11 (एन्हांस्ड एडिशन) लॉन्च करने की घोषणा की। यह अत्याधुनिक वैरिएंट एंटरप्राइजिज और प्रोफेशनल्स की अलग अलग तरह की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो बेहद किफ़ायती कीमत पर बेहतरीन परफॉर्मेंस, सुरक्षा, मैनेजेबिलिटी और ड्यूरेबिलिटी का एक बेहतरीन कॉम्बीनेशन प्रदान करता है। आशीष सिक्का, डायरेक्टर और कैटेगरी हेड, लेनोवो इंडिया ने कहा कि यूज़र्स की बदलती मांगों को ध्यान में रखते हुए, के11 (एन्हांस्ड एडिशन) टैबलेट को आज के एंटरप्राइजिज और प्रोफेशनल्स की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो बेहतरीन परफॉर्मेंस, ड्यूरेबिलिटी और मैनेजेबिलिटी का एक बेहतरीन मिक्स प्रदान करता है। इसका वाइब्रेंट डिस्प्ले और पॉवरफुल प्रोसेसिंग इस टैबलेट को उन बिज़नेसेज और कर्मचारियों के लिए एक आइडियल विकल्प बनाता है जो एक ही डिवाइस में कई सारे काम एक साथ करने और बेहद कार्यकुशलता की अपेक्षा करते हैं। शानदार 11 इंच की एलसीडी डिस्प्ले के साथ 400 निट्स ब्राइटनेस और 1920 × 1200 रिज़ॉल्यूशन, शानदार विजुअल्स प्रदान करता है। डॉल्बी एटमॉस0 से लैस क्वाड स्पीकर इमर्सिव साउंड प्रदान करते हैं।

एचडीएफसी बैंक के राजस्थान में 25 साल पूरे

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने राजस्थान में सफल संचालन के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं। राज्य में 495 शाखाओं वाला बैंक राजस्थान के सभी जिलों में मौजूद है। एचडीएफसी बैंक ने अशोक मार्ग, जयपुर में वर्ष 1999 में पहली शाखा खोलकर परिचालन शुरू किया। बैंक ने पहले 14 साल 100 शाखाओं के नेटवर्क के साथ राज्य में मजबूत उपस्थिति बनाने में लगाए। अगले आठ वर्षों में, इसने 100 और शाखाएँ जोड़ीं और आज राज्य में इसकी लगभग 500 शाखाए हैं। देशभर में अपने शाखा विस्तार की भावना के अनुरूप, एचडीएफसी बैंक की कुल 47 प्रतिशत शाखाएँ राजस्थान के अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में हैं।

30 जून, 2024 तक, एचडीएफसी बैंक कुल अग्रिमों में 17 प्रतिशत की बाजार हिस्सेदारी के साथ राजस्थान में दूसरा सबसे बड़ा ऋणदाता है। एमएसएमई और प्राथमिकता क्षेत्र ऋण में बैंक की बाजार हिस्सेदारी क्रमश: 18.37 प्रतिशत और 19.8 प्रतिशत है। 10,000 से अधिक कर्मचारियों के समर्पित वर्कफोर्स के साथ एचडीएफसी बैंक राजस्थान में सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है और बढ़ रहा है। 30 सितंबर, 2024 तक, अपने सीएसआर ब्रांड परिवर्तन के माध्यम से, एचडीएफसी बैंक ने राज्य भर में 42.84 लाख लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। बैंक बांसवाड़ा, बारां, जयपुर, करौली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सिरोही और उदयपुर सहित अन्य में स्थानीय समुदाय के लिए कार्यरत है जबकि एचडीएफसी बैंक की परिवर्तन पहल विभिन्न कारणों से लागू की गई है। बैंक को राज्य में स्कूल के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए राजस्थान सरकार द्वारा कई बार भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

उदयपुर के पूर्व-राजपरिवार के सदस्य महेंद्रसिंह मेवाड़ पंचतत्व में विलीन

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और पूर्व सांसद महेंद्रसिंह मेवाड़ (83) का 11 नवम्बर को शाम 4 बजे अंतिम संस्कार किया गया। उनके बेटे और नाथद्वारा से भाजपा विधायक विश्वराजसिंह मेवाड़ ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस दौरान उनका पोते देवजादित्यसिंह भी साथ में थे। उदयपुर स्थित उनके निवास समोर बाग पैलेस से सुबह 11 बजे उनकी अंतिम यात्रा शुरू हुई जो जगदीश चौक, घंटाघर, बड़ा बाजार, भड़भूजा घाटी, देहली गेट होते हुए दोपहर तीन बजे आयड़ स्थित महासतिया पहुंची। वहां उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनकी अंतिम यात्रा जिस भी सड़क और बाजार से गुजरी, बड़ी संख्या में लोगों ने उनको अंतिम विदाई दी। इससे पहले, सुबह 8 से 11 बजे तक उनकी पार्थिव देह समोर बाग पैलेस में अंतिम दर्शन के लिए रखी गई। यहां उनका पूरा परिवार मौजूद रहा। महेंद्र सिंह मेवाड़ की बहू महिमा कुमारी राजसमंद से भाजपा सांसद हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, बीजेपी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, बीजेपी के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया समेत कई राजनेताओं और ब्यूरोक्रेट्स ने महेंद्रसिंह मेवाड़ को पुष्पांजलि अर्पित की। उल्लेखनीय है कि 28 अक्टूबर को महेंद्रसिंह मेवाड़ को ब्रेन स्ट्रोक आया था। तभी से वे अनंता हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती थे। अनंता हॉस्पिटल में 10 नवम्बर को उनका निधन हो गया था।

सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी महेन्द्रसिंहजी :

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि एकबार मैं और सुलगते प्रश्न साप्ताहिक के संपादक सुरेन्द्रजी शर्मा महेन्द्रसिंहजी मेवाड़ का इंटरव्यू लेने समोरबाग गए। बड़ा आश्चर्य हुआ और आज भी आश्चर्य होता है कि जब हमने घंटी बजाई और एक व्यक्ति आया जो कहीं से भी महाराणा मेवाड़ महेन्द्रसिहजी नहीं लग रहे थे। हमने समझा कि यह उनका नौकर है। हेड ऑफ दी सर्वेंट है। उन्होंने कहा कि पधारो सा बिराजो।

उन्होंने आधा पायजामा पहन रखा था। बनियान पहन रखी थी और हमें बिठाकर अंदर चले गए। फिर ठीक से कपड़े पहन कर आए और बोले, हां साहब। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह तो महेन्द्रसिंहजी मेवाड़ लग रहे हैं। न हमने उनको कुछ पूछा और न उन्होंने कुछ कहा।

कितने सीधे साधे और सादगीपूर्ण व्यक्तित्व लिए थे महेन्द्रसिंहजी। ऐसे महाराणा मेवाड़, महाराणा अब नहीं भी रहे हों तब भी ऐसे किसी का स्वागत कर उपर नहीं ले जाते हैं। सामान्य व्यक्ति भी अपने घर में अच्छे ढंग से रहता है। इसके बाद हमने महेन्द्रसिंहजी का इंटरव्यू लिया जो बहुत पुरानी बात हो गई।

अब तो सुरेन्द्रजी शर्मा भी हमारे बीच नहीं हैं। मैंने महेन्द्रसिंहजी के निधन का समाचार सुना तो घोर आश्चर्य हुआ। वे कितने सीधे साधे व्यक्तित्व थे जिन्होंने जिंदगी में किसी की अवमानना शायद ही की हो।

गीतांजली में एमबीबीएस छात्रों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (जीएमसीएच) ने अपने पहले वर्ष के एमबीबीएस छात्रों का भव्य स्वागत करते हुए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 250 नए छात्रों और उनके अभिभावकों ने भाग लिया, जो उनके चिकित्सा पेशे की यात्रा की शुरुआत का प्रतीक बना।

कार्यक्रम की शुरुआत में अतिरिक्त प्राचार्य डॉ. मनजिंदर कौर ने छात्रों को अकादमिक ढांचे से परिचित कराया और उनकी पढ़ाई में मेहनत और समर्पण के महत्व पर जोर दिया। मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. हरप्रीत सिंह ने अस्पताल की संरचना और चिकित्सा सुविधाओं का परिचय दिया, जो छात्रों की व्यावहारिक शिक्षा में सहायक होंगी।

प्रोफेसर और मनोचिकित्सा विभाग के प्रमुख डॉ. जितेंद्र जींगर ने रैगिंग के खिलाफ जागरूकता और जीएमसीएच की सख्त एंटी-रैगिंग नीति पर प्रकाश डाला, जिससे छात्रों में एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण की भावना का संचार हुआ।

जीएमसीएच की डीन डॉ. संगीता गुप्ता और कुलपति डॉ. राकेश व्यास ने नए छात्रों को बधाई दी और चिकित्सा क्षेत्र में करुणा, सहानुभूति और सेवा के महत्व पर जोर दिया।

जीएमसीएच के चेयरमैन जे.पी. अग्रवाल ने ीवन, करियर और पेशे के लिए अच्छी आदतों के विकास पर जोर दिया। उन्होंने अनुशासन, निरंतरता, सहानुभूति और संचार कौशल के महत्व पर बल देते हुए इन्हें एक सफल चिकित्सा पेशेवर बनने के लिए आवश्यक बताया।

कार्यक्रम का समापन व्हाइट कोट सेरेमनी के साथ हुआ, जिसमें प्रोफेसरों ने नए छात्रों को सफेद कोट पहनाकर उन्हें चिकित्सा पेशे में विधिवत प्रवेश दिलाया। इस सेरेमनी ने छात्रों को चिकित्सा क्षेत्र में उनके समर्पण और सेवा के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। ओरिएंटेशन कार्यक्रम छात्रों के लिए एक अविस्मरणीय और प्रेरणादायक अनुभव रहा, जिसने उनके शैक्षणिक सफर की सकारात्मक शुरुआत की।

शरदचन्द्र पुरोहित इंडियन रेलवे के सेक्रेटरी जनरल नियुक्त

उदयपुर (ह. सं.)। सिटी स्टेशन अधीक्षक शरदचन्द्र पुरोहित भारतीय रेलवे की ऑल इंडिया स्टेशन मास्टर्स एसोसिएशन में सेक्रेटरी जनरल चुने गए। बोधगया में दो दिवसीय स्टेशन मास्टर एसोसिएशन के केन्द्रीय कार्यकारिणी का कार्यक्रम हुआ। इसमें केन्द्रीय स्तर की टीम का चुनाव हुआ। इसमें देशभर से 600 स्टेशन मास्टर्स के बीच चुनाव की प्रक्रिया हुई। उत्तर पश्चिम रेलवे से सिर्फ उदयपुर सिटी स्टेशन अधीक्षक शरदचन्द्र पुरोहित केन्द्रीय टीम में चुने गए हैं। इस कार्यक्रम में स्टेशन मास्टर कैडर की समस्याओं पर चर्चा भी हुई। इसमें पदनाम परिवर्तन, स्टेशन मास्टरों को सुरक्षा-तनाव भत्ता देने, सभी स्टेशनों पर सुपरवाइजरी स्टेशन मास्टर (एसएमआर) की पोस्ट सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई।

लिखता हूं मैं

- रमेश बोराणा -

लिखता हूं मैं उद्वेलन
भीतर से जो कचोटता है।
प्रस्तव पीड़ा सा लगता है।।
लिखता हूं मैं यथार्थ
जो घटता है मेरे आसपास।
दिखता है अंदर बाहर।।
लिखता हूं मैं इंसान
उसके छद्म रूप मंसूबों को।
उसकी पीड़ी उसकी खुशी को।।
लिखता हूं मैं अहसास
जिये भोगे पलों का।
खटी मीठी अनुभूतियों का।।
लिखता हूं मैं सत्य
प्रकृति नियति का।
जीवन मरण का।।
लिखता हूं मैं उम्मीद
आंनद खुशहाली की।
इंसान के इंसान बने रहने की।।
लिखता हूं मैं ज्ञान
साहित्य दर्शन मीमांसा का।
भूत अनुभूत भविष्य का।।
लिखता हूं मैं डर
धर्म विज्ञान दुरुपयोग का।
सता शासन के मुखौटों का।।
लिखता हूं मैं संवेदना
मानवीय सोच मूल्यों की।
पतित पीड़ित जगत की।।
लिखता हूं मैं दायित्व
अपने होने के अर्थ का।
चिंतन को चेतन करने का।।

एचडीएफसी बैंक परिवर्तन 2025 तक 3500 स्कूलों में स्मार्ट क्लासेस स्थापित करेगा

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने अपनी सीएसआर पहल 'परिवर्तन' के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से पूरे भारत में यंग माइंड्स के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को याद करते हुए बाल दिवस मनाया। इस अवसर पर बैंक ने 'लिटिल स्माइल बिग ड्रीम्सथ' नामक एक डिजिटल अभियान शुरू किया है, जिसमें 'एचडीएफसी बैंक परिवर्तन' द्वारा समर्थित स्कूलों के प्रतिभाशाली युवा छात्रों को दिखाया गया है। पिछले 10 वर्षों में, परिवर्तन ने 2.16 करोड़ से अधिक छात्रों के जीवन को प्रभावित किया है, 20.22 लाख से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है और 2.87 लाख से अधिक स्कूलों को सहायता प्रदान की है

एचडीएफसी बैंक परिवर्तन ने 2025 को देखते हुए, स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित किए हैं, जिनमें यह सुनिश्चित करना कि स्कूलों में 20 लाख छात्र कक्षा-उपयुक्त सीखने के स्तर को प्राप्त करें। 3,500 स्कूलों में डिजिटल शिक्षा और प्रौद्योगिकी को अपनाते हुए स्मार्ट कक्षाएं स्थापित करना एवं 25,000 वंचित छात्रों को सहायता प्रदान करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना, ताकि निरंतर शिक्षा और उज्जवल भविष्य तक पहुँच सुनिश्चित हो सके, इत्यादि शामिल है।

एचडीएफसी बैंक के उप प्रबंध निदेशक कैजाद एम भरुचा ने कहा कि एचडीएफसी बैंक में हम मानते हैं कि शिक्षा हमारे समुदायों के लिए एक उज्जवल और अधिक न्यायसंगत भविष्य की आधारशिला है। 'परिवर्तन' के तहत हमारी सीएसआर पहलों के माध्यम से हम शैक्षिक बुनियादी ढांचे को बदलने, व्यक्तियों को सशक्त बनाने और लचीले समुदायों को विकसित करने में मदद करने के लिए अपना काम कर रहे हैं। हम एक ऐसे भविष्य के निर्माण में निवेश कर रहे हैं जहाँ हर बच्चा बड़ा सपना देख सके और अपनी पूरी क्षमता का एहसास कर सके।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

बीर मेरी डूंगरियो रा मोर

– द्वारकाप्रसाद वर्मा –

लोकगीत लोक-भावना के प्रतीक तो होते ही हैं, मगर वहां की स्थानीय संस्कृति, आचार-विचार, खानपान और रहन-सहन का प्रतिबिम्ब केवल लोकगीतों में ही स्वस्थ रूप में मिलना सम्भव है। दाम्पत्य-पक्ष का बाहुल्य प्राय: लोकगीताों में एकरसता ला देता है पर सम्बन्धों में किसी भी पक्ष को गीतों छूता नहीं छोड़ा है। राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी भाग में जो संस्कृति पनप रही है, वह शेखावाटी के नाम से जानी जा सकती है। उसी सांस्कृतिक क्षेत्र के लोकगीत कुछ यहां दिये जा रहे हैं जिनमें भाई और बहन का आपसी स्नेह मुखरित हुआ है।

उड़ रै पपया जाये डूंगरा
ल्याये मेवां री ल्हार
चौमासो सावण ओलर्‌यो जी राज
अब तो खिनादे जीजा मेरी भाण नै
किंया खिनाद्यूं साळा तेरी भाण नै
कुण पीसैगो रै साळा मेरो पीसणू
अर कुण हाळी की ल्यावै छाक
चौमासो सावण ओवर्‌यो जी राज

पपीहा उड़कर पर्वतों पर से मेह की लहर ला रहा है, क्योंकि सावन अपनी पूरी मस्ती के साथ छा रहा है और चौमासा की ऋतु के आने के आसार नजर भा रहे हैं। ऐसे में तीज और रक्षाबंधन के पवित्र त्यौहारों के अवसरों पर अपनी प्रिय बहन को उसकी ससुराल से उसके पीहर लाना अत्यावश्यक है पर एक बहनोई जो किसान है, अपनी पत्नी को खेतों के काम की वजह से अपने साला के साथ भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट करता है। साला अपनी बहन को ले जाने के लिए याचना करता है, मगर उसका बहनोई अनाज पीसने और खेत में खाना पहुंचाने की विवशता बताता है। किसी भी कीमत पर भाई अपनी बहन को ले जाने को तैयार है, और वह उक्त समस्याओं का समाधान भी अपने बहनोई को बताता है-

मायड़ तो पीसै जीजा तेरो पीसणू
अर भाण हाळी की ल्यावै छाक
चौमासो सावण ओलर्‌यो जी राज
मायड़ तो साळा मेरी बूढ़ी डोकरी
अर भाण का बैठ्या लहरिणयार
चौमासो सावण ओलर्‌यो जी राज

जीजाजी! खाने का अनाज तो माताजी (बहन की सास) पीस लेंगी और खेत में खाना आपकी बहन पहुंचा देगी। मेरी बहन को तो कृपया मेरे साथ भेज ही दीजिये, क्योंकि सावन पूरी तरह से छा रहा है और चौमासा लगने के ढंग हो रहे हैं। तब उसका बहनोई प्रत्युत्तर में कहता है कि मेरी बूढ़ी जर्जर माँ की हालत अब पीसने योग्य नहीं रह गई है और मेरी बहन को ससुराल ले जाने वाले घर पर बैठे हैं ।

खुरपो तो गेरूं बीरा मेरा झाड़ में
मैं तो चालूंगी तेरे साथ यी
चौमासो सावण आलर्‌यो जी साज
आली तो तोड़ू साळा सोटकी
सुरडूंगो तेरी भाण नै
चौमासो सावण ओलर्‌यो जी राज

पीहर के स्नेह के अतिरेक में बहन बिना अपने पति की आज्ञानुसार घास खोदने की खुरपी को जाड़ी में फैंककर चलने को तैयार होती है मगर पतिदेव को झाड़ी की गीली बेंत तोड़ते देखकर उसे भ्रातृप्रेम अनिच्छा से विस्मृत करना पड़ता है।

एक आदर्श भाई भगवत :

किवदन्ति के अनुसार भगवत नामक एक भाई अपनी इकलौती बहन से अपेक्षाकृत अधिक स्नेह रखता था। वह ग्वाल रहा करता था। एक दिन रेवड़ (मवेशियों) को ताल के किनारे छोड़कर वह सदा के लिए चल बसा। शायद सांप ने उसे काट खाया था-

रेवड़ियो छोड्यो ताल में
बीरा रै सो गयो खूंटी ताण
भगूतां बीरा भलो परगट्यो रै

भगवत की मृत्यु की सूचना उसके स्वजनों ने उसकी बहन को इसलिए नहीं दी कि उन्हें विश्वास नहीं था कि इस आघात को बहन सह सकेगी या नहीं। आखिर सावन भी आ गया, मगर घरवालों को उसकी बहन को लाने का साहस नहीं हुआ। मृत आत्मा यह सब कुछ समझ रही थी। भगवत ने एक अच्छे से ऊंट पर शानदार आसन जंचाया और अपनी बहन को लाने उसके ससुराल पहुँच गया। वापस लौटते समय गांव की सरहद में, जहां भगवत की अकाल मृत्यु हुई थी, उसने उस अलौकिक ऊंट को बिठाया और दूसरे ही पल में भगवत अपने सुन्दर ऊंट सहित अन्तर्धान हो गया तब चौराहे पर खड़ी बहन वस्तुस्थिति को समझकर बिलखने लग गई-

के तनै पीग्यो पीवणूं भगूंता रै
के तनै डसगो नाग मेरी मां का जाया
भलो परगट्यो रै

हे भाई! तुझे कौनसा पीनेवाला सांप पी गया या कौन सा नाग डस गया जो तू इस तरह प्रकट होकर चला गया। शेखावाटी मे इस गीत को सावन और भादों में लगातार गाते हैं। भावाभिव्यक्ति के अनुकूल लय होने के कारण इस गीत के कई स्थल मर्म को छूने की क्षमता रखते हैं।

बीर कै भाग लाडली
बा कमावै दिन अर रात
मनै तील पचास करादी
आंग्यां को अन्त न पार
थे देखो काकी तायो ये
थे देखो बींरै को देज

एक भाई की एक बहन है और वह भाई से अत्यधिक स्नेह रखती है। क्योंकि मां बाप न होने के कारण वत्सल प्रेम की पूर्ति भी वह भाई द्वारा ही करती है। ससुराल जाने के समय उसके भाई ने उसकी सन्दूक विभिन्न प्रकार के कपड़ों से भर दी, तो बहन अपने भाई के 'देज' (दिया हुआ) को सभी को दिखा दिखा कर मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करती है।

भीतर सैं भावज नीसरी
अर माथे में सळवट च्यार
मैं खुणै में बड़ की रोई रै
मेरे कोनी मायड़ बाप
बारे सैं बीरो आयो रै
मेरे सिर पर धरियो हाथ
बाई राजी खुशी घर जाये
ये आवूंगा में दिन च्यार
सोने सूं पोळी कर दी रै
मनै हीरा सूं दीनी जड़ाय
मैं गोरवां बैठी देखूं रे
मैं देखू बीरा री बाट
बीरा रो साफो चिलक्यो रै
घोड़ां री बाजी टाप

बहन अपने भ्रातृ-स्नेह में पुलकित हो रही थी कि उसकी भाभी अन्दर से त्यौरियां चढ़ाये हुए निकली। भाभी की उपेक्षा बहन से सही नहीं गई तो कोने में घुसकर सिसक पड़ी। बाहर से कोई आया और स्नेहसिक्त हाथ फेरने पर कहीं इकलौती बहन शांत हुई। सोने से पीली कर और हीरों से जड़ाकर अपनी बहन को चार दिन बाद वापस लिवालाने का वादाकर भाई ने बहन का गौना किया। तीज अपनी जन्मभूमि पर मनाने की उतावल में बहन अपने भाई की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर ही रही थी कि उसे साफा चमकता हुआ नजर आया और घोड़ों की टाप सुनाई दी।

बीर मेरो डूंगरिया रो मोर :

सूती धण नखवर नीन में
सुपने में बांटी घूघरी
सोवो होक जागो बाई का बीर
में सुपने में बांटी घूघरी

कोई यौवना गाढ़ी नींद में स्वप्न देखती है कि वह घूघरी बंटवा रही है अर्थात् पुत्रप्राप्ति के बाद की वह स्वप्निल अवस्था देखती है तो उसका पति उसे गँवार बताता है मगर उसकी यह मनोकामना भी एक दिन पूरी हो जाती हैं और वह सबके घरों में घूघरी बंटवाती है, मगर नाई जो घूघरी बांटने का काम करता है, कहती है कि जेठ के घर और देवर के घर तो घूघरी बांट आना पर ननद के घर घूघरी नहीं बंटनी चाहिये मगर पुराना समझदार नाई उसके पति का भगिनी प्रेम जानता था और उसने जच्चा की इस बात को 'तिरियाहठ' समझकर उसकी ननद के घर भी घूघरी बांट दी-

दीनी नाई को उरलै-परलै बास
नणदल कै झाड्यो छाबड़ो

घूघरी बंट चुकने के पश्चात जच्चा ने नाई को घूघरी वितरण के सम्बन्ध में पूछा तो ननद के घर घूघरी चली जाने पर वह रूठ गई। बिना खाये पिये, नन्हे शिशु को स्तनपान करवाये बिना, बाल बिखेर कर जच्चा रानी सो गई—

सूती धण आसणपाटी लेय
होलर नै बोबो नीं दियो जी
आयो आयो होलरिये को बाप
म्हारी जचा बिलसी क्यूं रही
थारो नाइको असल गंवार
म्हारी बांट नी जाणै घूघरी
उठो जचा राणी होलरियो हुलराय
बारी पाछी ल्याद्या घूघरी जी राज

बाहर से पति ने आकर जच्चा रानी की खिन्न स्थिति को देखकर वास्तविकता को पहचाना मौर मूर्ख पत्नी की जिद् एवं नन्हे मुन्ने की नाजुक स्थिति को देख वह घूघरी वापस लाने की प्रतिज्ञा कर अपनी बहन के पास जा पहुँचा। असमय में बहन ने भाई को आते देखा तो सारी स्थिति का अन्दाज लगा लिया। भाई के स्नेह का उसे पूर्ण विश्वास था और भाभी की कुटिलवृत्ति की जानकारी भी। भाई ने प्यार जताते हुए इस हादसे को पत्नी के स्वभाव का परिणाम ही बताया। बहन ने भी अपनी भाभी की घूघरी वापस लौटाने की प्रतिज्ञा कर भाई को विदा किया। भाभी के इस कुकृत्य एवं अपमान किये जाने की क्रिया को स्वाभिमानिनी और लाड़ली बहन सहन न कर सकी। भाभी का बदला उतारने की गरज से उसने सोने और चांदी की अनगिनत घूघरी बनवा कर और डेढ़ सौ गीत गानेवाली औरतों को साथ लेकर भाई के घर जाने की तैयारी की।

आई बाई कांकड़िये कै मांय
म्हारा बाळ गवाळा सै डर्‌या
देवरिया तूं ऊचो चढ़ की देख
शहरां में गळबो कूण कर्‌यो
म्हारी भैंस्या ढाबा तुड़ाया
म्हारी हांड्या ढकणी बगाई

जच्चा रानी देवर से कह रही है कि देवरजी, देखिये तो सही, यह ढोल-ढमाका और शौर शराबा किसने मचाया है जिससे जानवर रस्से तुड़वाकर भाग रहे हैं और घर की हांडियां अपने ढक्कन अलग फैंक रही है।

बहन ने भाभी के घर पहुंचकर उसकी दो कोड़ियों की घूघरियों के बदले में सोने-चांदी की घूघरी बंटवाई तो लोकलाज के डर से भाभी ने ननद को चुप करवाया। भाई ने अपनी बहन को अथाह 'देज' दिया और भाभी शर्म से गड़ी जा रही थी। बहन ने भाभी और भाई की तुलना की-

बीर मेरो है ज्यू दिल दिरयाव
भावजड़ी जळ री माछळी
बीर मेरो सावरिया रो मेह
भावजडी आभा बीजळी
बीर मेरो डूंगरिया रो मोर
भावजड़ी बन री कोयळी

मेरा भाई तो विशाल समुद्र सा दिल रखता है, जिसमें भाभी का हिस्सा छोटी मछली जितना है। मेरा भाई सावन के मेह की तरह है, जिसमें भाभी कभी-कभी बिजली की तरह चमकती भर है। मेरा भाई तो पहाड़ पर बैठ कर बोलने वाला वह मोर है, जो मीलों तक सुनता है और इस हिसाब से भाभी तो सिर्फ उस कोयल जैसी है, जो छोटे से बगीचे में कभी-कभी कूक लेती है।

इण्डियन मेटल सेक्टर में क्लाईमेट एक्शन रिर्पोट करने वाली हिन्दुस्तान जिंक पहली कंपनी बनी

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड अपनी चौथी क्लाईमेट एक्शन रिर्पोट लॉन्च करने वाली देश में धातु और खनन क्षेत्र की पहली कंपनी बन गई है। इंटरनेशनल सस्टेनेबिलिटी स्टेण्डर्डस बोर्ड्स द्वारा जारी इंटरनेशनल फाइनेनशियल रिर्पोटिंग स्टेण्डर्डस एस 2 के लिये यह रिपोर्ट हिन्दुस्तान जिंक की जलवायु पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एसएंडपी ग्लोबल कॉरपोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट 2023 के

अनुसार विश्व की सबसे सस्टेनेबल कंपनी हिंदुस्तान जिंक 2050 तक या उससे पहले नेट जीरो उत्सर्जन प्राप्त करने की दिशा में डीकार्बोनाइजेशन को आगे बढ़ाने के लिए अपनी जलवायु-लचीली रणनीतियों को विकसित करना जारी रखे हुए है।

चेयरपर्सन प्रिया अग्रवाल हेब्बार ने कहा कि हमारे बिजली उपयोग में रिन्यूएबल एनर्जी को बढ़ाने, बैटरी चलित वाहनों के संचालन, जल प्रबंधन सुनिश्चित करने जैसे प्रभावशाली परिवर्तन लाने के लिए हमारे ठोस कार्यों से हमारा स्वच्छ भविष्य की दिशा में प्रयास उत्पन्न होता है। इंटरनेशनल फाइनेनशियल रिर्पोटिंग स्टेण्डर्डस एस 2 सिफारिशों के अनुरूप हमारी नई जलवायु कार्रवाई रिपोर्ट, पारदर्शिता और स्थिरता के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने इंटरनेशनल फाइनेनशियल रिर्पोटिंग स्टेण्डर्डस एस 2 सिफारिशों के अनुरूप पहली जलवायु कार्रवाई रिपोर्ट लॉन्च पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह रिपोर्ट जलवायु कार्रवाई प्रयासों में हुई प्रगति को प्रदर्शित करती है। यह हमारे लिए जरूरी है कि हमारा व्यावसायिक विकास एक बहुआयामी दृष्टिकोण पर निर्भर हो जो संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग, परिसंपत्तियों की उच्चतम दक्षता प्राप्त करने और कार्बन शमन की ओर केंद्रित ड्राइव पर आधारित हो।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।